रुपये 10

सेवा समर्पण

वर्ष-40, अंक-05, कुल पृष्ठ-36, माघ-फाल्गुन, विक्रम सम्वत् 2079, फरवरी, 2023

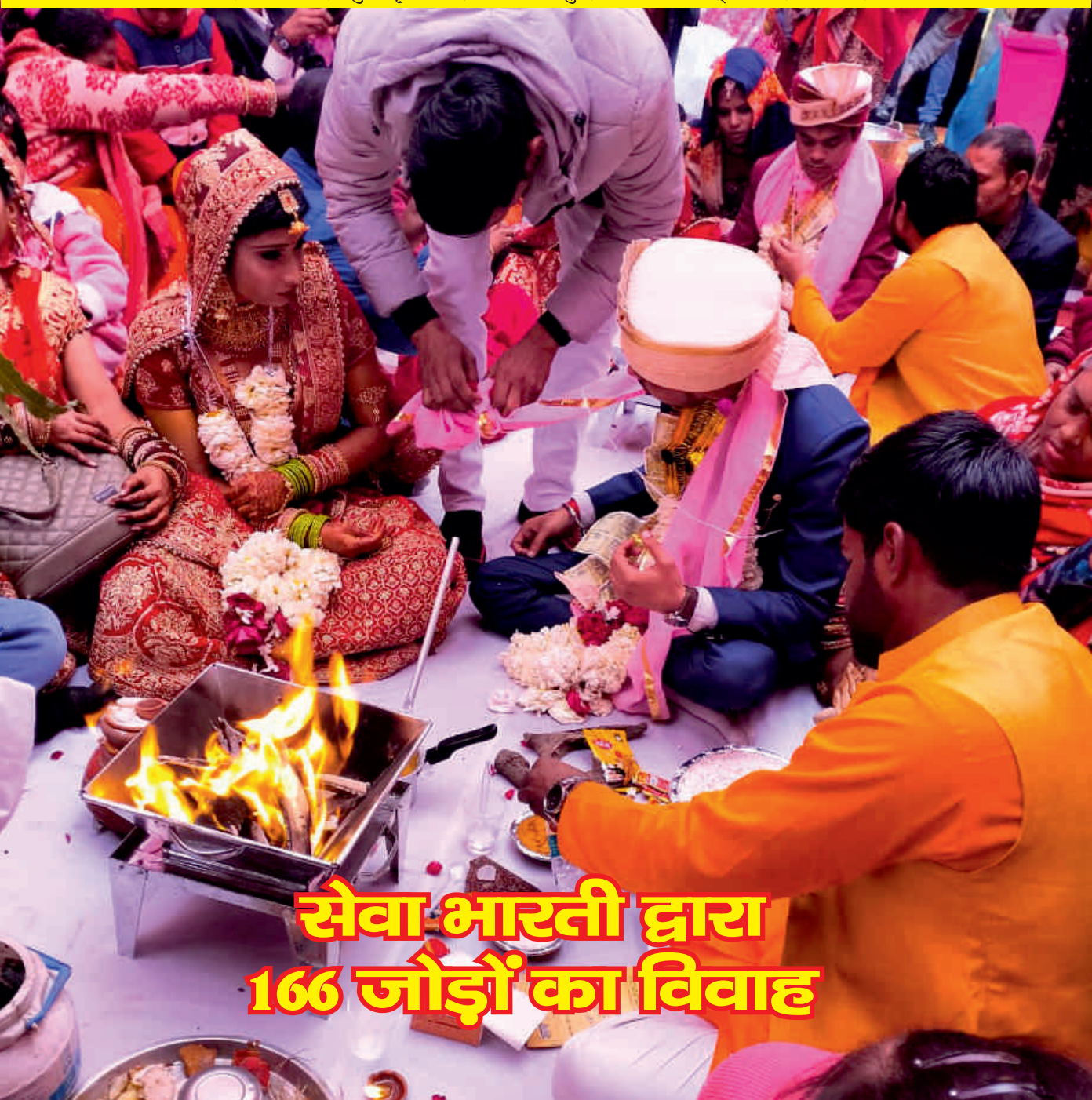

सेवा भारती द्वारा 166 जोड़ों का विवाह

सेवाधाम विद्या मन्दिर (पुरातन छात्र मिलन कार्यक्रम)

सेवा भारती सेवाधाम विद्या मन्दिर में गणतंत्र दिवस समारोह एवं सेवाधाम पूर्व छात्र परिषद का 27वां वार्षिकोत्सव 26 जनवरी को बहुत ही उत्साहपूर्वक, सेवाधाम विद्या मन्दिर परिसर में सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में राष्ट्रीय सेवा भारती के क्षेत्रीय संगठन माननीय जयदेव जी (दादाजी), राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ दिल्ली के प्रांत प्रचारक श्रीमान जतिन जी, दिल्ली प्रांत सह-संगठन मंत्री श्री सुनील जी, सेवा भारती दिल्ली प्रांत उपाध्यक्ष श्री संजय गर्ग जी का सान्निध्य प्राप्त हुआ। सम्पूर्ण कार्यक्रम अखिल भारतीय धर्म यात्रा समिति के कार्यकारी अध्यक्ष, सेवाधाम प्रबंध समिति के उपाध्यक्ष एवं प्रसिद्ध उद्योगपति श्री प्रमोद अग्रवाल जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। संपूर्ण कार्यक्रम की योजना रचना सेवाधाम विद्यामन्दिर के प्रधानाचार्य श्री राजेन्द्र सिंह जी एवं सेवाधाम के पूर्व छात्र तथा प्रसिद्ध उद्योगपति श्री प्रदीप सोलंकी जी की देखरेख में सम्पन्न हुआ। सरस्वती पूजन का एवं मंचीय कार्यक्रमों का भव्य आयोजन हुआ। पूर्व छात्रों एवं वर्तमान छात्रों को एक साथ मिलना बहुत ही अच्छा अनुभव रहा। इस कार्यक्रम की कुल संख्या 506 रही। इस अवसर पर समाज में उल्लेखनीय कार्य करने वाले बहनों एवं भाइयों को सम्मानित किया गया। विद्यालय परिसर में ही विशेष भोजन की व्यवस्था की गई। इस विशेष भोजन का सहयोग श्री प्रमोद अग्रवाल जी के द्वारा किया गया। श्री संजय गर्ग जी के आग्रह पर सेवाधाम के पूर्व छात्रों ने वर्तमान छात्रों से विद्यालय परिसर में पाक्षिक/मासिक मिलते रहने का आश्वासन दिया।

-ओंकार नाथ मिश्र

गणतंत्र पर्व पर ध्वजारोहण

यमुना विहार विभाग स्थित मीतनगर सेवा बस्ती में 26 जनवरी, 2023 को गणतंत्र दिवस समारोह आयोजित हुआ। इसमें बस्ती की अम्मा जी श्रीमती महेन्द्री देवी जी का पुष्प माला से सेवा भारती यमुना विहार विभाग के मंत्री द्वारा स्वागत किया गया। 75 वर्षीय अम्मा जी ने ध्वजारोहण किया तथा सभी को आशीर्वाद दिया। महर्षि वाल्मीकि शाखा के शाखा कार्यवाह श्री पुष्पराज जी ने सभी का धन्यवाद किया।

गणतंत्र दिवस कार्यक्रम

इन्द्रप्रस्थ जिले के सभी केन्द्रों पर गणतंत्र दिवस दिवस मनाया गया। ध्वजारोहण के साथ अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम और देशभक्ति गीत का आयोजन किया गया। सेवित जनों ने उत्साहपूर्वक बढ़ चढ़ कर भाग लिया। विभाग जिले के कार्यकर्ता बन्धु और भगिनियों ने शिक्षिका /निरीक्षिकाओं का पूर्ण सहयोग किया। गांधी नगर जिले में गणतंत्र दिवस के अवसर पर सभी केन्द्रों पर रोचक कार्यक्रम किए गए। सभी मिलजुल कर कार्यक्रम को उत्साहपूर्वक मनाया। इन बस्तियों में इस अवसर पर माधव सेवा संस्था (श्री रोमेश गुप्ता जी) के सहयोग से बालवाड़ी के बच्चों को स्वेटर वितरित किए गए।

सौन्दर्य कला परीक्षा का आयोजन

पूर्वी विभाग मयूर विहार जिले के माधव सेवा केन्द्र, 32 ब्लॉक, त्रिलोकपुरी में सौन्दर्य परीक्षा का आयोजन 20 और 21 जनवरी को किया गया। 9 विद्यार्थियों ने इसमें भाग लिया। प्रान्त से सौन्दर्य विशेषज्ञा निधि दीक्षित जी ने इनको देखा-परखा। प्रथम दिन आई ब्रो मेनिक्योर-पेडिक्योर, ब्लीच, फेशियल व वैक्स, आदि किए गए। दूसरे दिन सभी छात्राओं ने दुल्हन को पूर्ण रूप से तैयार किया।

परामर्शदाता
आचार्य मायाराम पतंग
डॉ. राम कुमार

सम्पादक
श्रीमती इन्दिरा मोहन

सहसम्पादक
शिवाली अग्रवाल

कार्यालय
सेवाकुंज, 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23345014/15
E-mail: info@sewabhartidelhi.org
Website: www.sewabhartidelhi.org

पृष्ठ सज्जा
मणिशंकर

एक प्रति : 10/-रुपये
वार्षिक शुल्क : 100/-रुपये

सेवा समर्पण

वर्ष-40, अंक-05, कुल पृष्ठ-36, फरवरी, 2023

विषय - सूची

शीर्षक	लेखक	पृ.
सम्पादकीय		04
...166 कन्याओं का विवाह	डॉ. संगीता त्यागी	06
शिव हैं जहाँ, आनन्द है वहाँ	इन्दिरा मोहन	10
जब 1000 फीट से .... लगाई छलांग	आचार्य अनमोल	11
माघ पूर्णिमा का महत्व	अरुण द्विवेदी	13
सेवा के प्रतीक भक्त रविदास जी	कु. संस्कृति	14
वे महामानव थे	आचार्य मायाराम 'पतंग'	16
बाल कविताएँ	दिविक रमेश	18
भावग्राही भगवान् ने पुराना स्वेटर भी स्वीकारा		19
डोंगरे जी महाराज के जीवन का एक मार्मिक प्रसंग	शुकदेव	20
मदद	तरुण गुप्ता	21
मेरा भारत महान	विनीता अग्निहोत्री	21
पूर्वी विभाग की गतिविधियाँ	भारती बंसल	22
...जिन्हें काली माँ के दर्शन हुए	स्वाति पाठक 'स्वाति'	23
लाल रंग का पत्थर	आचार्य राजन दीक्षित	25
संवेदना भी है उपचार में सहायक	प्रतिनिधि	26
कहानी : विश्वासघात	महावीर रवांल्टा	28
स्वयं को माफ करना न भूलें	प्रतिनिधि	31
मुकाबला नहीं पटियाला पोशाक का	मीनाक्षी मक्कड़	33

पाठकों से अनुरोध

सेवा समर्पण के सुधी पाठकों से अनुरोध है कि वे हर अंक में प्रकाशित लेखों और महापुरुषों के विचारों पर अपनी राय अवश्य भेजें।

पता : संपादक, सेवा समर्पण,
13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23345014/15, E-mail: info@sewabhartidelhi.org

मिली प्रकृति और पर्यावरण बचाने की प्रेरणा

अक्सर यह देखा जाता है कि जहाँ कहीं भी कोई आयोजन होता है, तो वहाँ कचरे ही कचरे फैले रहते हैं। कई दिनों तक प्लास्टिक की वस्तुएँ और अन्य चीजें बिखरी रहती हैं। इससे वायु तो दूषित होती ही है, साथ ही पर्यावरण का भी भारी नुकसान होता है। इस मामले में अमदाबाद में एक महीने (14 दिसंबर, 2022 से 15 जनवरी, 2023) तक चले प्रमुख स्वामी महाराज शताब्दी महोत्सव से बहुत कुछ सीखा जा सकता है। स्वामिनारायण संस्था के वर्तमान आध्यात्मिक गुरु परमपूज्य महंत स्वामी महाराज के नेतृत्व में मनाए गए इस उत्सव में एक करोड़ 21 लाख से अधिक लोग सम्मिलित हुए, लेकिन कहीं भी एक कागज का टुकड़ा भी गिरा हुआ नहीं मिला।

बता दें कि इस उत्सव के लिए 600 एकड़ में प्रमुख स्वामी महाराज नगर अस्थाई रूप से बसाया गया था। नगर में पर्यावरण का पूरा ध्यान रखा गया। जैसा कि हम सब को पता है जहाँ करोड़ों की संख्या में लोग एकत्र होते हैं, वहाँ अपशिष्ट, उपयोग किया हुआ पानी और कार्बन डाइऑक्साइड भी बड़ी मात्रा में पैदा होती है। लेकिन वातावरण में ऑक्सीजन के संतुलन को बरकरार रखने के लिए नगर में 13,25,000 फूलों के पौधे लगाए गए थे। इतना ही नहीं, इस्तेमाल किए गए पानी के उचित निपटान की भी व्यवस्था की गई थी। यह सुनिश्चित करने के लिए सभी उपाय किए गए थे कि नगर में फेंकी गई हर चीज का पुनः उपयोग किया जाए और अनुपयोगी वस्तुओं का उचित तरीके से निपटान किया जाए।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह रही कि नगर में प्रयोग किए गए पानी को खुले में नहीं बहाया गया। पानी की सही निकासी सुनिश्चित करने के लिए पूरे नगर में भूमिगत लाइनें बिछाई गई थीं। रसोईघर, प्याऊ, फूड स्टॉल से गन्दा पानी निकालने के लिए गटर व्यवस्था का नियोजित जाल बिछाया गया। नगर के शौचालयों में इस्तेमाल होने वाले पानी को अमदाबाद महानगर पालिका की टीपी योजना के तहत ड्रेनेज लाइन में डाला गया। इस पूरी व्यवस्था से नगर में मच्छर एवं बदबू का नामोनिशान तक नहीं था।

घरेलू और अन्य कचरों को अमदाबाद महानगर पालिका को दिया जाता था। खाद्य अपशिष्ट-गीला और कच्चे कचरे से नगर परिसर में ही खाद बनाई गई। कचरे को एकत्र कर अलग करने के लिए विशेष स्वयंसेवकों की एक टीम गठित की गई। स्वयंसेवक सभी प्रकार के कचरों का वर्गीकरण कर अलग-अलग निस्तारण करते थे। इसके अलावा शहर भर में पहले से ही गीले और सूखे कचरे को अलग करने के लिए जगह-जगह हरे और भूरे रंग के कूड़ेदान रखे गए थे।

प्लास्टिक कचरे का निपटान करने के लिए एक नूतन दृष्टिकोण अपनाया गया। पूरे प्रमुख स्वामी महाराज नगर में कहीं भी सिंगल यूज्ड प्लास्टिक का उपयोग नहीं किया गया। इसके साथ ही प्लास्टिक की बोतलों का सही तरीके से निस्तारण के लिए मशीन लगाई गई थी। यहाँ से निकलने वाले प्लास्टिक के कचरे से बेंच बनाई गई, प्लास्टिक की बोतलों से डिब्बे बनाए गए और बढ़े हुए प्लास्टिक कचरे का सरकारी मानकों के अनुसार निस्तारण किया गया। नगर में प्रयुक्त सीमेंट और धातु के पुनः उपयोग के लिए विशेष व्यवस्था की गई। इस्तेमाल हो चुके सीमेंट और मेटल से ब्लॉक आदि बनाए जा रहे हैं।

600 एकड़ की विशाल भूमि में फैले नगर में इस बात का विशेष ध्यान रखा गया कि कहीं धूल न जम जाए, धूल के कण आने-जाने वालों को परेशान न करें। पूरे नगर को धूल मुक्त करने के लिए एक करोड़ पेवर ब्लॉक लगाए गए थे। नगर में हवा की गुणवत्ता जांचने के लिए कुल 8 एयर मॉनिटरिंग बॉट मशीनें लगाई गई थीं।

संस्था के स्वयंसेवकों द्वारा एक विशेष प्रकार की फॉगर मशीन विकसित की गई थी, जो टेंपो से चलती थी। आमतौर पर यह फॉगर मशीन निर्धारित स्थान पर जाकर निर्धारित समय पर फॉगिंग करती है, लेकिन ऑनलाइन मॉनिटरिंग के माध्यम से किसी क्षेत्र में ज्यादा जरूरत होने पर विशेष फॉगिंग कर हवा की गुणवत्ता को बनाए रखा जाता था।

आशा की जाती है कि अन्य संगठन और लोग भी इस कार्य से प्रेरणा लेकर प्रकृति और पर्यावरण की चिंता करेंगे। ❐

पाथेय

सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टो मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं च।
वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो वेदान्तकृद्वेदविदेव चाहम्॥15॥

सरलार्थ : अर्थात् मैं ही संपूर्ण प्राणियों के हृदय में स्थित हूँ तथा मुझसे ही स्मृति, ज्ञान और अपोहन (संशय आदि दोषों का नाश) होता है। संपूर्ण वेदों के द्वारा मैं ही जानने योग्य हूँ वेदों के तत्त्व का निर्णय करने वाला और वेदों को जानने वाला भी मैं ही हूँ। यहाँ भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को कह रहे हैं कि परमेश्वर के रूप में वे अंतर्यामी हैं और इसीलिए हृदय क्षेत्र में वे विशेष रूप से उपलब्ध एवं उपस्थित हैं।

शाश्वत धर्म

रामकृष्ण परमहंस कहा करते थे- "एक हाथी है, उसे नहला-धुलाकर छोड़ दो तब फिर वह क्या करेगा? मिट्टी में खेलेगा और शरीर को फिर से गंदा कर लेगा। कोई उस पर बैठे, तो उसका शरीर भी गंदा अवश्य होगा। लेकिन यदि हाथी को स्नान कराने के बाद बाड़े में बाँध दिया जाए तब फिर हाथी अपना शरीर गंदा नहीं कर सकेगा। इसी प्रकार मनुष्य का मन भी एक हाथी के समान है। एक बार ध्यान-साधना और भगवान के भजन से वह शुद्ध हो गया तो उसे स्वतंत्र नहीं कर देना चाहिए। इस संसार में पवित्रता भी है, गंदगी भी है। मन का स्वभाव है वह गंदगी में जाएगा और मनुष्य देह को दूषित करने से नहीं चूकेगा। इसलिए उसे गंदगी से बचाए रखने के लिए एक बाड़े की जरूरत होती है, जिसमें वह घिरा रहे। गंदगी की संभावनाओं वाले स्थानों में न जा सके।

"ईश्वरभजन, उसका निरंतर ध्यान एक बाड़ा है, जिसमें मन को बंद रखा जाना चाहिए तभी सांसारिक संसर्ग से उत्पन्न दोष और मलिनता से बचाव संभव है। भगवान को बार-बार याद करते रहोगे तो मन अस्थायी सुखों के आकर्षण और पाप से बचा रहेगा और अपने जीवन के स्थायी लक्ष्य की याद बनी रहेगी। उस समय दूषित वासनाओं में पड़ने से स्वतः भय उत्पन्न होगा और मनुष्य उस पापकर्म से बच जाएगा, जिसके कारण वह बार-बार अपवित्रता और मलिनता उत्पन्न कर लिया करता है।''

फरवरी 2023 माह के स्मरणीय दिवस

दिनांक	वार	महत्व
05.2.2023	रविवार	पूर्णिता, संत रविदास जयंती
11.2.2023	शनिवार	पं. दीनदयाल उपाध्याय बलिदान, कवि निराला जयंती, फागुन कृ.पंचमी
15.2.20223	बुधवार	ऋषि दयानंद जयंती
18.2.2023	शनिवार	महाशिवरात्रि, स्वामी रामकृष्ण परमहंस जयंती
19.2.2023	रविवार	श्रीगुरुजी जयंती
20.2.2023	सोमवार	सोमवती अमावस्या
21.2.2023	मंगलवार	फुलैरा दूज
26.2.2023	रविवार	वीर सावरकर पुण्यतिथि
28.2.2023	मंगलवार	राष्ट्रीय विज्ञान दिवस एवं लट्ठमार होली बरसाना

वंचित और उपेक्षित परिवारों की 166 कन्याओं का विवाह

■ डॉ. संगीता त्यागी

यदा-कदा होने वाले सामूहिक वैवाहिक कार्यक्रमों में पिछले कुछ वर्षों में बड़ा ही सकारात्मक परिवर्तन देखा जा रहा है। समाज के कमजोर वर्गों के बीच काम कर रही सेवा भारती एक ओर जहां उपेक्षित वर्ग के सामाजिक उत्थान के प्रति निरंतर प्रगतिशील है, तो दूसरी ओर इस समाज को अपने दम पर आत्मनिर्भर बनाने के सभी प्रयासों के बीच विशेष रूप से चलाये जा रहे सामूहिक विवाह समारोह कार्यक्रमों की संख्या में लगातार वृद्धि दर्ज की जा रही है। जो हर वर्ष के वैवाहिक आवेदनों के साथ-साथ आयोजन स्थलों की संख्या में लगभग दुगुने से भी ज्यादा है।

दिनांक 25 जनवरी को दिल्ली के ब्रह्मपुरी, दिलशाद गार्डन, करावल नगर व मानसरोवर पार्क में वंचित व उपेक्षित परिवारों की कुल 23 कन्याओं का विवाह संस्कार कराया गया। इसी क्रम सेवा भारती की ओर से वसंत पंचमी 26 जनवरी के दिन दिल्ली में 16 अलग अलग स्थानों पर कुल 100 और विवाह संपन्न हुए। पिछले 20 वर्षों से सेवा भारती लगातार इस प्रकार के सामूहिक विवाह कार्यक्रम आयोजित कर रही है, जिसमें 1700 से अधिक की संख्या में विवाह सम्पन्न हुए हैं।

जाति, भाषा, क्षेत्र, मत-संप्रदाय, ऊँच-नीच, अमीर-गरीब आदि के नाम पर बिखरे हुए समाज को एकसूत्र में पिरोने के प्रयास का नाम ही सेवा भारती है। समाज में एक ओर जहाँ बड़ी मात्रा में वंचित-उपेक्षित वर्ग है, वहीं दूसरी ओर जिम्मेदार व संस्कारित संपन्न समाज भी है। इन दोनों के बीच की कड़ी का दूसरा नाम ही सेवा भारती है। शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वावलंबन व संस्कार के माध्यम से आज के सेवितजन आने वाले कल के सेवक बनें। सेवा भारती इसी उद्देश्य की पूर्ति में पिछले 43 वर्षों से प्रयासरत है।

ये सामूहिक विवाह मात्र दो वंचित परिवारों का मिलन ही नहीं, बल्कि समाज के प्रत्येक वर्ग की सकारात्मक सोच व वंचित समाज के लिये एकजुट होकर खड़े रहने की मिसाल को भी दर्शाता है। ये सामूहिक विवाह दर्शाते हैं कि सभी कार्य सरकार नहीं कर सकती और समाज के अपने कर्तव्य भी हैं और इसकी शक्ति भी असीमित है।

वसंत पंचमी पर हुए इन विवाह समारोहों में इन सभी बातों की स्पष्ट झलक दिखाई पड़ी।

उल्लेखनीय है सेवा भारती देशभर में आर्थिक रूप

द्वारका जिला

जनक जिला

- **यमुना विहार विभाग** में 24 जोड़ों का विवाह हुआ। इनमें करावल नगर जिले में 9, ब्रह्मपुरी जिले में 4, नन्द नगरी जिले में 5, रोहतास नगर जिले में 6 जोड़ों का विवाह हुआ। इस विभाग में विवाह कार्यक्रम 25 जनवरी को संपन्न हुए। विशेष बात रही कि करावल नगर जिले में विवाह दो स्थान पर हुए।
- **दक्षिणी विभाग** में कुल 13 जोड़ों का विवाह संपन्न कराया गया। इनमें बदरपुर जिले में 9 और लाजपत जिले में 4 जोड़े थे। दोनों स्थानों में 1200 से भी अधिक लोग उपस्थित रहे।
- **केशव पुरम विभाग** में 21 जोड़ों का विवाह कराया गया। इनमें जनक जिले के 5, तिलक जिले के 5, मोती नगर जिले के 4 और सरस्वती जिले के 7 जोड़े शामिल हैं।
- **पश्चिमी विभाग** में 10 जोड़े थे। इनमें नांगलोई और द्वारका जिले के 5-5 जोड़े शामिल थे।
- **उत्तरी विभाग** में कुल 27 जोड़ों का विवाह हुआ। इनमें रोहिणी जिले के 9, कंझावला जिले के 7, नरेला जिले के 7 और बुराड़ी जिले के 4 जोड़े हैं।
- **झंडेवाला विभाग** में 30 जोड़ों का विवाह हुआ। इनमें करोलबाग जिले में 10, मुखर्जी नगर जिले में 9, पटेल नगर जिले में 5 और कमला नगर जिले में 6 जोड़ों का विवाह हुआ।
- पूरी दिल्ली में 32 स्थानों पर वैवाहिक कार्यक्रम आयोजित हुये। इनमें सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि सेवा बस्तियों के लोगों ने भी बढ़-चढ़ कर योगदान किया और यथासंभव मदद भी की।

से कमजोर पक्षों हेतु इस प्रकार के सामूहिक विवाह समारोह का आयोजन करती है और विगत कुछ समय से समाज के सभी वर्गों की भागीदारी से सेवा भारती का यह विशेष अभियान समाज के एकीकरण की दृष्टि से अत्यंत ही सफल हो रहा है और निश्चित रूप से यह भविष्य में एक नई क्रांति लाएगा जिससे समाज में निर्धन-धनी, जातिगत, भाषा, क्षेत्र, मत-संप्रदाय आदि के भेदभावों को कम किया जा सकेगा।

तिलक नगर जिला

तिलक जिले में वसंत पंचमी के दिन श्री सनातन धर्म मंदिर (मुखर्जी पार्क, तिलक नगर) में पांच कन्याओं के सामूहिक विवाह का कार्यक्रम बड़ी धूमधाम और शुद्ध वैदिक परम्परागत ढंग से आयोजित हुआ। सभी कन्याओं को समुचित उपहार दिया गया। श्री सनातन धर्म मंदिर समिति के कार्यकर्ताओं का उल्लेखनीय सहयोग मिला।

प्रसिद्ध उद्योगपति एवं समाजसेवी श्री राजन क्वात्रा की अध्यक्षता में सामूहिक विवाह का कार्यक्रम हुआ। कार्यक्रम में क्षेत्र के निगम पार्षद श्री सुनील चड्ढा भी उपस्थित रहे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के माननीय जिला संघचालक महेंद्र जी, विभाग प्रचारक मनीष जी, नगर संघचालक अमर सिंह जी, दिल्ली प्रांत के विनय जी सहित बड़ी संख्या में स्वयंसवक और अन्य लोग उपस्थित थे।

रोहतास नगर

25 जनवरी 2023 बुधवार को जिला रोहतास नगर के द्वारा अग्रवाल धर्मशाला, मानसरोवर पार्क में 6 कन्याओं का विवाह सम्पन्न हुआ। इस विवाह में सेवा भारती ने समाज के विशिष्ट वर्ग तथा अन्य संस्थाओं को भी जोड़ा है। इस आयोजन में दिल्ली प्रांत सेवा भारती के अध्यक्ष श्री रमेश अग्रवाल जी स्वयं उपस्थित रहे तथा मंच से सेवा भारती के विविध सेवा प्रकल्प की विस्तार से आनकारी श्रोताओं को कराई। वि.हि. परिषद के कार्यकारी अध्यक्ष श्री आलोक कुमार जी की सह धर्मिणी श्रीमती मंजू प्रभा जी ने इन कन्याओं के विवाह में पर्याप्त सामान ही नहीं दिया, बल्कि स्वयं उपस्थित रहकर कन्याओं को आशीर्वाद भी दिया। मंडप के द्व ार पर दूल्हों का स्वयं आरती उतार कर स्वागत किया। प्रान्त से श्री निर्भय शंकर जी तथा श्री सुनील जी भी पधारे। श्रीमान जयदेव जी और श्रवण जी भी आशीर्वाद देने आए। डॉ. विशाल चड्डा जी उनके साथ थे।

यमुना विहार (करावल नगर)

दक्षिणी विभाग (लाजपत नगर)

उल्लेखनीय उपस्थिति रहीं श्रीमती गरिमा गुप्ता, आईएएस, जो महिला एवं बाल कल्याण मंत्रालय की सचिव हैं। इनके साथ एचआरडी मंत्रालय के अतिरिक्त निदेशक श्री राजेश महाजन आईआरएस ने भी मंच पर विराजमान सभी जोड़ों को शुभाशीष दिया। सेवा भारती की प्रारंभिक टोली के कार्यकर्ता एवं सेवा समर्पण मासिक के वरिष्ठ परामर्शदाता आचार्य मायाराम पतंग ने भी मंच पर विराजमान सभी जोड़ों को शुभाशीष दिया। यमुना विहार विभाग के माननीय संघचालक श्री अरुण शर्मा तथा कार्यवाह श्री मुकेश गौतम, सेतु के सदस्य श्री नरेश कुमार भी उपस्थित रहे। अग्रवाल ध र्मशाला की कार्यकारिणी के अधिकारी मानसरोवर पार्क युवा मंडल के कार्यकर्ता सभी बढ़चढ़ कर सहयोग दे रहे थे। महाजन सत्संग मंडल के श्री सुशील जी ने सैकड़ों लोगों के लिए भोजन की सुन्दर व्यवस्था करके पुण्यार्जन किया।

रोहतास नगर क्षेत्र के भाजपा के सभी नवनिर्वाचित और पुराने अधिकारी उपस्थित रहे। विधायक श्री जितेन्द्र महाजन, नवनिर्वाचित पार्षद श्रीमती रीना महेश्वरी, संजय गोयल, श्रीमती सुमनलता नागर एवं श्री धर्मवीर नागर, श्री दिव्य जायसवाल आदि सभी ने सहयोग दिया।

सेवा भारती की शिक्षिकाओं, छात्र-छात्राओं ने भी मंच पर अनेक आकर्षक कार्यक्रम दिखाए। मंच का सफल संचालन विभाग अध्यक्ष श्री अशोक बंसल ने किया। सभी कार्यकर्ताओं ने अपने निर्धारित दायित्व कुशलतापूर्वक निभाया।

ब्रह्मपुरी जिला- सेवा भारती ब्रह्मपुरी जिले में सामाजिक/आर्थिक रूप से निर्धन चार कन्याओं का विवाह माता जीवनी बाई सेवा केन्द्र पर बड़े उत्साहपूर्वक संपन्न हुआ। विवाह में विभिन्न सामाजिक, धार्मिक संगठनों का भी पूर्ण सहयोग रहा। विशेष रूप से वाल्मीकि समाज, सूर्यवंशी, जैन, गुर्जर, सिख, एवं ब्राह्मण समाज के बंधुओं ने भागीदारी की। सामाजिक कार्यकर्ता उत्तम जी, सुशील जी, निर्भय जी, वरिष्ठ प्रचारक दादा जी विभाग से श्री गवेन्द्रपाल जी, सुनेहरी लाल जी का भी सान्निध्य मिला। जिला महिला समिति की टोली और क्षेत्रीय भगिनियों ने मंगल आरती कर वरों का स्वागत किया। बंधुओं के माता-पिता द्वारा मुक्त कंठ से प्रशंसा की गई और वर-वधू पक्ष के लोगों ने भविष्य में सेवा भारती से जुड़ने की इच्छा जताई। श्रीमती रमा उपाध्याय ने बहुत सुन्दर रूप से मंच संचालन किया।

जनक जिले में 26 जनवरी को 5 कन्याओं का सामूहिक विवाह हुआ। सुबह 6:30 बजे कार्यकर्ता विवाह स्थल पर पहुंच कर विवाह की तैयारियों में लग गए। कुछ वर-वधू के परिवार वाले भी कार्यक्रम की तैयारी में लगे। कार्यक्रम सुबह 10:00 बजे आरंभ किया गया। सबसे पहले तिरंगा फहराया गया। प्रयोग विहार बस्ती के बच्चों ने राष्ट्रगान गाया। उसके पश्चात

नांगलोई जिला

उत्तरी विभाग (नरेला)

मुख्य अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन किया गया। 11बजे सरस्वती मां का पुष्पों द्वारा पूजन किया गया। शिक्षिका बहनों ने सरस्वती वंदना गाई। सभी बारातें समय पर आईं। कन्याओं को तैयार करने में वाई डब्ल्यू सी ए कॉलेज के बच्चों का सहयोग मिला। उसके बाद लड़की के पिता और लड़के के पिता की मिलनी करवाई गई। पांच कन्याओं की जयमाला सभी समाज के बंधुओं के बीच करवाई गई। प्रांत से बनकर आए प्रशस्ति पत्र सम्मान के रूप में दानदाताओं को सामूहिक विवाह के मंच पर ही दिए गए ताकि उनका उत्साह बना रहे और आगे भी हमें उनका सहयोग मिलता रहे।

कार्यक्रम को सफल बनाने में सनातन धर्म कतियाल मंदिर समिति, लायंस क्लब, फ्रंटियर भवन सभा, सनातन धर्म मंदिर (तिहाड़ गांव), वाल्मीकि समाज, वाई डब्ल्यू सी ए, कॉलेज, सनातन धर्म मंदिर तिहाड़ गांव, गुरुद्वारा बुड्ढा साहिब जी, मोहन मंदिर समिति, सेवा सप्ताह में लगाए गए मेडिकल कैंप एन एम ओ, आनंदपुर कुटिया मानक विहार सभा, साई बैंड आदि का सहयोग मिला। भावलपुर समाज संघ के कार्यकर्ताओं का विशेष सहयोग रहा। प्रांत एवं विभाग और जिला कार्यकर्ताओं ने मिल जुलकर कार्यक्रम को बहुत सुंदर एवं सफल बनाया। कार्यक्रम में, शिक्षिका, निरीक्षका और तिहाड़ गांव की भजन मंडली का सहयोग रहा। सभी कार्यकर्ताओं ने अनुशासन को बनाए रखा। कार्यक्रम में आए लोगों की संख्या 600 रही।

सेवा भारती **मोती नगर जिला** केशव पुरम विभाग द्वारा 26 जनवरी वसंत पंचमी के दिन सामूहिक विवाह समारोह आयोजित हुआ। समारोह में नगर संचालक एवं अध्यक्ष श्री सनातन सभा मोती नगर श्री नरेंद्र गुप्ता जी का आशीर्वाद प्राप्त हुआ। समाजसेवी एवं निगम पार्षद श्री मनोज जिन्दल जी की गरिमामय उपस्थिति रही। इसके अतिरिक्त विभाग प्रचारक श्री मनीष जी भी उपस्थित रहे। श्री मेघराज गोयल जी, श्री प्रमोद अग्रवाल जी, श्री अशोक गोयल जी कविता अग्रवाल जी, पुष्पा गोयल जी, सरिता गिरहोत्रा जी का भी सान्निध्य मिला। सह प्रांत कार्यवाह श्री अनिल गुप्ता जी, जिला संघचालक श्री जयप्रकाश जी का आशीर्वाद प्राप्त हुआ। प्रांत प्रतिनिधि श्री दयानंद जी का भी आशीर्वाद मिला। राजीव गिरहोत्रा जी और प्रदीप तिवारी और उनके साथी भी उपस्थित रहे। विभाग मंत्री श्री रामसेवक जी एवं जिला कार्यकारिणी और महिला समिति शिक्षिकाओं और निरीक्षिकाओं का भी सहयोग मिला। ❐

विशेष सूचना

पूर्वी विभाग में पांच स्थानों पर 12 फरवरी को 31 जोड़ों का, रामकृष्ण पुरम विभाग में 6 फरवरी को पांच जोड़ों का और उत्तम नगर जिले में 12 फरवरी को विवाह संपन्न होंगे।

शिव हैं जहाँ, आनन्द है वहाँ

■ इन्दिरा मोहन

जैसे आकाश में मेघमाला, सरोवर में तरंग, सूर्य में तेज वैसे ही शिव जगत के कण-कण में व्याप्त हैं। हम सब उनकी उपासना करते हैं, पुष्प, बेलपत्र तथा नैवेद्य चढ़ाते हैं, किन्तु क्या शिवत्व को जीवन में उतारते हैं? क्या उन सिद्धांतों पर चलते हैं जिसके शिव प्रवर्तक हैं!

शिव जी का सारा जीवन बुराइयों का नाश और भलाई की स्थापना के लिये है। उन्होंने विश्व ही नहीं, देवताओं के कल्याण के लिये कंठ में विष धारण किया और नील कंठ कहलाए। दानवों का दमन कर शिवत्व की स्थापना की। शिव समन्वय, सहिष्णुता, प्रेम, शान्ति और कल्याण के आधार हैं। तभी वे पुराणों में सारे विरोधी भावों का सामंजस्य करने वाले देव के रूप में चित्रित किए गये हैं। शिव अर्धनारीश्वर होकर भी काम विजेता, गृहस्थ होते हुए भी गृहस्थी के प्रपंचों से दूर, भोग-सुविधाओं से परे तपस्वी समाधिस्थ हैं। भयंकर सांप और सौम्य चन्द्रमा दोनों उनके शरीर की शोभा हैं। मस्तक में प्रलय कालीन अग्नि, सिर पर हिम शीतल गंगा का श्रृंगार। सहज बैर भुला कर साथ-साथ क्रीड़ा करते वृषभ, सिंह, मोर और सांप। न्याय एवं प्रेम के शासन का कितना आदर्श रूप भगवान शंकर प्रस्तुत करते हैं। शिव प्रेम स्वरूप हैं, कल्याण स्वरूप हैं, इसलिये इन विरोधों को हँसते-हँसते सहन करते हैं।

जीवन की पूर्णता बंटने में नहीं, बिखरने में नहीं एक होने में है। जगत में द्वन्द्व तो रहेगा ही सुख-दुख, पाप-पुण्य, जीवन-मरण, धूप-छाया की भांति सदैव साथ-साथ रहने हैं। अतः अपने में शिवत्व जागृत कर संसार के विष को पीना होगा। हमें केवल अपने लिये नहीं, दूसरों की भलाई के बारे में सोचना है। प्राणीमात्र को एकसूत्र में बांधने वाली शक्ति प्रेम है, प्रेम का आधार शिवत्व ही है। शिवत्व अर्थात् कल्याण के उच्चतर स्तर पर उठना जहां दूसरा कोई शेष न रहे। सबमें वहीं एक चेतन तत्व विराजमान है फिर भेदभाव कैसा। यह सत्य ही शिवत्व है। हम सबके हृदय में शान्त, स्थिर और अचल रूप से रमने वाला एक ही शिव तत्व विष्णु रूप से भरण-पोषण करता है, रुद्र रूप से संहार करता है और ब्रह्म रूप से उत्पन्न करता है।

यूँ तो शिव सदा सौम्य हैं किन्तु संसार के अनर्थों पर दृष्टि डालते ही भयंकर हो जाते हैं। सृष्टि क्रम ठीक-ठाक चले तो कल्याण अन्यथा रूलाने वाले रुद्र। वे अज्ञान के उन बन्धनों का भी संहार करते हैं जो आत्मा को बांधे रखते हैं। वे संहार करते हैं कि अज्ञान नष्ट हो, मोह दूर हो, गर्व चूर हो, लोभ निर्मूल हो, आसुरी भाव एवं रूप जल कर शुद्ध हो। उनकी भीषण निर्दयता में उनके हृदय की करुणा छिपी है, दया छिपी है। वे तो केवल मनुष्य ही नहीं, प्राणीमात्र का कल्याण चाहते हैं।

वास्तव में वे हमारे जीवन की ऊर्जा हैं, चेतना हैं। तेज, बल, ज्ञान और बलिदान का आधार हैं जिसके निकलते ही शरीर शव हो जाता है और जला कर पंचभूतों में मिला दिया जाता है। जब तक हम अपने स्थूल शरीर, चंचल मन और अस्थिर बुद्धि को महत्व देते रहेंगे तब तक हमारी वास्तविक शक्ति, सीमित व कुंठित होती जाएगी। इसके विपरीत शिव का स्पर्श जितना प्रगाढ़ होगा उतना ही हमारा व्यक्तित्व सात्विक बुद्धि से युक्त, व्यवहार में कुशल एवं मंगलमय विचारों से परिपूर्ण हो सकेगा। तब हम अपने मार्ग के साथ-साथ दूसरों का पथ भी आत्मज्ञान से आलोकित कर सकेंगे।

शिव तत्व तो गंगा है। जितनी बार उनके नाम-स्मरण, स्वरूप-चिन्तन में डुबकी लगाइये, ज्ञान-भक्ति-उपासना से भरी अंजुरी छलक-छलक कर आस-पास आनन्द बिखेरती जाएगी। ये आनन्द वस्तुओं के जोड़ने का आनन्द नहीं, सुविधा का आनन्द नहीं, सत्ता के संचय का भी आनन्द नहीं वरन् सबसे जुड़ने का, सबसे एक होने का सहज आनन्द है जहाँ प्रशांति ही प्रशांति है, पवित्रता ही पवित्रता है, प्रेम ही प्रेम है। ❐

जब 1000 फीट से मंदाकिनी नदी में लगाई छलांग

■ आचार्य अनमोल

समर्थ गुरु रामदास एक प्रसिद्ध सन्त थे, जो महाराष्ट्र में 1606 से 1682 के दौरान हुए। उनका मूल नाम नारायण सूर्याजी पंत कुलकर्णी था। इनका जन्म महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले के जांब नामक स्थान पर रामनवमी के दिन मध्याह्न में जमदग्नि गोत्र के ऋग्वेदी ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम सूर्याजी पन्त था। समर्थ गुरु रामदास हिंदू साम्राज्य की स्थापना करने वाले छत्रपति शिवाजी के गुरु भी थे। छत्रपति शिवाजी और रामदास स्वामी पहली बार 1674 में मिले और शिवाजी ने समर्थ गुरु रामदास स्वामी को अपना गुरु मान लिया।

भारत के दक्षिण में जब पठानों का पतन हो गया और हिन्दू राजाओं ने अपने-अपने राज्य स्थापित कर लिए, तब वे राजा बहुत से लोगों को जमीन और धन देकर अपने राज्य में बसाते थे। अनेकों लोग निजामशाही छोड़कर गोदावरी के किनारे बस गए। उन लोगों में कृष्ण जी पन्त नाम के ब्राह्मण भी सन् 962 ईस्वी में उत्तर गोदावरी के तट बीड़ प्रान्त में हिबरा नामक गाँव में परिवार सहित रहने लगे । इनके बड़े पुत्र का नाम दशरथ पन्त था जो हिबरा से 12किलोमीटर दूरी पर बडगाँव में गए। यहाँ वह पुरोहित का काम करने लगे। इनके बड़े पुत्र का नाम रामजी पन्त था। रामजी पन्त के पुत्र सूर्याजी पन्त हुए जो प्रसिद्ध भगवद्भक्त तथा एक प्रबुद्ध व्यक्ति थे। इनकी पत्नी का नाम रणूबाई था। यही समर्थ रामदास के माता-पिता थे ।

सूर्याजी पन्त सूर्यदेव के उपासक थे और प्रतिदिन आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ करते थे। पूजापाठ में उनका बहुत सा समय बीतता था। वे गाँव के पटवारी थे। उनकी माता का नाम राणुबाई था। वे संत एकनाथ जी के परिवार की दूर की रिश्तेदार थीं। वे भी सूर्य नारायण की उपासिका थीं। सूर्यदेव की कृपा से सूर्याजी पन्त को दो पुत्र गंगाधर स्वामी और नारायण ‹समर्थ रामदास› हुए। उनके बड़े भाई गंगाधर एक आध्यात्मिक सत्पुरुष थे और उनको सभी श्रेष्ठ कहकर बुलाते थे। उन्होंने सुगमोपाय नाम के ग्रन्थ की रचना की थी।

नारायण सूर्याजी पंत कुलकर्णी (समर्थ गुरु रामदास) बचपन में बहुत ही शरारती बालक थे। एक दिन उनकी माता राणुबाई ने नारायण से कहा-तुम दिन भर शरारत करते हो, कुछ काम किया करो। यह बात नारायण के मन में घर कर गई। दो-तीन दिन बाद यह बालक अपनी शरारत छोड़कर एक कमरे में ध्यान मग्न बैठ गया। दिनभर में नारायण नहीं दिखा तो घर में सभी को चिंता हुई और उन्हें ढूँढ़ने निकले पर उनका कोई पता नहीं चला। शाम के समय माता ने कमरे में उन्हें ध्यान करते देखा तो उनसे पूछा-नारायण! तुम यहाँ क्या कर रहे हो? तब नारायण ने जवाब दिया-मैं पूरे विश्व की चिंता कर रहा हूँ। इस घटना के बाद बालक नारायण की दिनचर्या ही बदल गई। उन्होंने समाज के युवा वर्ग को यह संदेश दिया कि स्वस्थ शरीर के द्वारा ही राष्ट्र की उन्नति संभव है। इसलिए उन्होंने व्यायाम एवं कसरत करने की सलाह दी। जन-चेतना लाने के लिए उन्होंने समस्त भारत का पैदल ही भ्रमण किया। समर्थ गुरु रामदास जी ने अपना समस्त जीवन रास्ट्र को अर्पित कर दिया।

12 वर्ष की अवस्था में जब नारायण का विवाह हो रहा था तब विवाह कराने वाले पंडित जी के मुख से 'सावधानाः भवंतु' शब्द सुनकर विवाह-मंडप से निकल गए और टाकली नामक स्थान पर श्रीरामचंद्र की उपासना में लग गए। उपासना में 12 वर्ष तक वे लीन रहे। भगवान की भक्ति करने के कारण यहीं उनका नाम रामदास पड़ा। गृहत्याग करने के बाद इसी भूमि को अपनी तपोभूमि बनाने का निश्चय करके उन्होंने कठोर तप शुरू किया। वे प्रातः ब्रह्म मुहूर्त में उठकर प्रतिदिन सूर्य नमस्कार करते थे। उसके बाद गोदावरी नदी में खड़े होकर राम नाम और गायत्री मंत्र का जाप करते थे। दिन में केवल 5 घर की भिक्षा मांगकर वह भगवान का भोग लगाते थे उसके बाद प्रसाद का भाग प्राणियों और पंछियों को खिलाने के बाद स्वयं ग्रहण करते थे। दिन में वे विभिन्न शास्त्रों का अध्ययन करते थे। उसके बाद वे भगवान का भजन करते थे। उन्होंने 13 करोड़ बार राम के नाम का जप 12 वर्षों में किया। इसी समय में उन्होंने स्वयं एक रामायण लिखी। यहीं पर उन्होंने भगवान श्री राम की जो प्रार्थनायें रची हैं वह करुणाष्टक नाम से प्रसिद्ध हैं। 24 वर्ष की आयु में उन्हें तप करने के बाद आत्म साक्षात्कार हुआ। टाकली में ही समर्थ रामदास जी ने प्रथम हनुमान का मंदिर स्थापित किया।

समर्थ रामदास के विषय में कहा जाता है कि वह हनुमान के अवतार थे। एक बार वे फिर रामराज्य की कल्पना को साकार करने आए थे। भविष्य पुराण में लिखा हुआ है-

कृतेहु मारुता ख्यातिः त्रेतायां पवनात्मजः।
द्वापरे भीम संज्ञश्च रामदासः कलौ युगे।।

अर्थात सतयुग में हनुमान, त्रेता में पवनात्मज, द्वापर में भीम तथा कलियुग में रामदास के नाम से प्रसिद्ध होंगे। प्रभु का आत्मसाक्षात्कार होने के बाद समर्थ रामदास तीर्थयात्रा पर निकल पड़े 12 वर्ष तक वे भारतवर्ष का भ्रमण करते रहे। देश का भ्रमण करते हुऐ वे हिमालय आये। हिमालय का पवित्र वातावरण देखने के बाद मूलतः विरक्त स्वभाव के रामदास जी के मन का वैराग्यभाव जागृत हो गया। उनके मन में आया कि अब मुझे आत्म साक्षात्कार हो गया है तो इस देह को धारण करने की क्या जरुरत है? ऐसा विचार उनके मन में आया। आत्म त्याग की भावना से उन्होंने खुद को 1000 फीट से मंदाकिनी नदी में छलांग लगा दी लेकिन उसी समय प्रभु श्रीराम ने उन्हें ऊपर ही उठा लिया और धर्म कार्य करने की आज्ञा दी। अपने शरीर को धर्म के लिए अर्पित करने का निश्चय उन्होंने कर दिया। तीर्थ यात्रा करते हुए वे श्रीनगर आए। वहाँ उनकी भेंट सिखों के गुरु हरगोविंद जी महाराज से हुई। गुरु हरगोविंद जी महाराज ने उन्हें धर्म रक्षा हेतु शस्त्र धारण करने का मार्गदर्शन किया। इस दौरान उन्होंने शासन की ओर से जनता की जो दुर्दशा देखी उससे उनका हृदय दुखी हो गया। उन्होंने प्रभु-साधना के साथ ही अपने जीवन का लक्ष्य स्वराज्य की स्थापना द्वारा आतातायी शासकों के अत्याचारों से जनता को मुक्ति दिलाना बनाया। शासन के विरुद्ध जनता को संघटित होने का उपदेश देते हुए वे भ्रमण करने लगे। इसी प्रयत्न में उन्हें छत्रपति शिवाजी जैसे योग्य शिष्य से मिलकर स्वराज्य स्थापना के स्वप्न को साकार होते हुए देखने का सौभाग्य उन्हें अपने जीवनकाल में ही प्राप्त हो सका।

अपने जीवन का अंतिम समय उन्होंने सातारा के पास परली के किले पर व्यतीत किया। इस किले का नाम सज्जनगढ़ पड़ा। तमिलनाडु प्रान्त के तंजावर ग्राम में रहने वाले अरणिकर नाम के एक जन्मांध कारीगर ने प्रभु श्री रामचंद्र जी, माता सीता जी, लक्ष्मण जी की मूर्ति बनाकर सज्जनगढ़ को भेज दी। इसी मूर्ति के सामने समर्थ जी ने अंतिम पाँच दिन निर्जल उपवास किया। और पूर्वसूचना देकर माघ नवमी शालिवाहन शाके 1603 सन 1682 को रामनाम जाप करते हुए पद्मासन में बैठकर ब्रह्मलीन हो गए। वहीं उनकी समाधि स्थित है। यह समाधि दिवस दासनवमी के नाम से जाना जाता हैं। यहाँ पर दास नवमी को लाखों भक्त दर्शन के लिए आते हैं। ❐

माघ पूर्णिमा का महत्व

■ अरुण द्विवेदी

माघ (माह) मास की पूर्णिमा को 'माघ पूर्णिमा' या माघी पूर्णिमा कहते हैं। इस दिन संगम (प्रयाग) के तट पर स्नान करने से, ध्यान करने से मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं और मोक्ष की प्राप्ति भी होती है। मघा नक्षत्र के नाम पर ही इस पूर्णिमा का नाम है। इस वर्ष यह पूर्णिमा 5 फरवरी 2023 को मनाई जाएगी।

माघ मास में सूर्य मकर राशि में आ जाता है। ऐसा माना जाता है कि इन दिनों देव ता पृथ्वी पर आते हैं। प्रयाग में स्नान-दान आदि करते हैं। देवता मनुष्य रूप धारण करके भजन-सत्संग आदि करते हैं। माघ पूर्णिमा के दिन सभी देवी-देवता अंतिम बार स्नान करके अपने लोकों को प्रस्थान करते हैं। पौराणिक मान्यता है कि इस दिन किसी भी तीर्थ, नदी, समुद्र आदि में प्रात:काल स्नान करने से, जप, तप, दान आदि करने से त्रय तापों (आधि दैविक, आधि भौतिक और आध्यात्मिक) से मुक्ति मिल जाती है। रामायण में भरत-कौशल्या के प्रसंग के अनुसार भरत ने माँ कौशल्या से कहा कि यदि राम को वन भेजे जाने में उनकी किंचितमात्र भी सम्मति रही हो तो वैशाख, कार्तिक और माघ पूर्णिमा के स्नान सुख से वो वंचित रहें। उन्हें निम्न गति प्राप्त हो। यह सुनते ही कौशल्या ने भरत को गले से लगा लिया। इस प्रसंग से भी इस पर्व का महत्त्व पता चलता है।

माघ पूर्णिमा को कल्पवास पूर्ण होता है। एक माह की तपस्या इस तिथि को समाप्त हो जाती है। कल्पवासी अपने घरों को लौट जाते हैं। स्वाभाविक है कि संकल्प की संपूर्ति का संतोष एवं परिजनों से मिलने की उत्सुकता उनके हृदय उत्साहित करती है।

निर्णय सिन्धु के अनुसार माघ मास के दौरान मनुष्य को कम से कम एक बार पवित्र नदी में स्नान करना चाहिए। भले पूरे माह स्नान के योग न बन सकें, लेकिन माघ पूर्णिमा के स्नान से स्वर्गलोक का उत्तराधिकारी बना जा सकता है।

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार माघ पूर्णिमा का स्नान इसलिए भी अति महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि इस तिथि पर चंद्रमा अपने पूर्ण यौवन पर होता है, पूर्णिमा पर चंद्रमा की किरणें पूरी लौकिकता के साथ पृथ्वी पर पड़ती हैं। स्नान के बाद मानव शरीर पर उन किरणों के पड़ने से शांति की अनुभूति होती है और इसीलिए पूर्णिमा का स्नान महत्वपूर्ण है। माघ स्नान वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है। माघ में ठंड खत्म होने की ओर रहती है तथा इसके साथ ही शिशिर की शुरुआत होती है। ऋतु के बदलाव का स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर नहीं पड़े, इसलिए प्रतिदिन सुबह स्नान करने से शरीर को मजबूती मिलती है।

ब्रह्मवैवर्त पुराण में उल्लेख है कि माघी पूर्णिमा पर भगवान विष्णु गंगाजल में निवास करते हैं। अत: इस पावन समय पर गंगाजल का स्पर्श मात्र भी स्वर्ग की प्राप्ति देता है। इसी प्रकार पुराणों में मान्यता है कि भगवान विष्णु व्रत, उपवास, दान से भी उतने प्रसन्न नहीं होते, जितना अधिक प्रसन्न माघ स्नान करने से होते हैं। महाभारत में एक जगह इस बात का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि इन दिनों में अनेक तीर्थों का समागम होता है। वहीं 'पद्मपुराण' में कहा गया है कि अन्य मास में जप, तप और दान से भगवान विष्णु उतने प्रसन्न नहीं होते, जितने कि वे माघ मास में स्नान करने से होते हैं। यही वजह है कि प्राचीन ग्रंथों में नारायण को पाने का आसान रास्ता माघ पूर्णिमा के पुण्य स्नान को बताया गया है। भृगु ऋषि के सुझाव पर व्याघ्रमुख वाले विद्याधर और गौतम ऋषि द्वारा अभिशप्त इन्द्र भी माघ स्नान के सत्व द्वारा ही श्राप से मुक्त हुए थे। 'पद्मपुराण' के अनुसार माघ-स्नान से मनुष्य के शरीर में स्थित ताप जलकर भस्म हो जाते हैं। ❐

सेवा के प्रतीक भक्त रविदास जी

■ कु. संस्कृति

भक्त रविदास और रैदास दोनों नाम एक ही संत के हैं। पन्द्रहवीं शताब्दी में इनका जन्म काशी (वाराणसी) में हुआ था। इनमें बचपन से ही साधु सेवा की प्रवृत्ति थी। नगर में जो भी साधु भ्रमण करते मिल जाते उनकी सेवा करने पहुंच जाते। किसी की झोली उठा कर चलते तो किसी की लंगोटी धोने लगते। किसी साधु को भोजन कराते तो किसी के रहने ठहरने की व्यवस्थ कराते। कोई महाराज दूर से पधारते तो उनकी चरण सेवा भी करते।

इनका विवाह इनके पिता रघु मल जी ने जल्दी कर दिया था, ताकि परिवार के कारण साधु सेवा भूल जाएं। रविदास फिर भी अपना सेवा का स्वभाव भूल नहीं पए। उन्होंने अपनी पत्नी को भी सेवा भावी बना लिया। इनके स्वभाव से दुखी होकर पिता ने इन्हें पत्नी सहित परिवार से अलग कर दिया ताकि अपने सिर पर पड़ी जिम्मेदारी संभाल लें।

तब भक्त रैदास जी ने अपनी अलग झोपड़ी डाल ली, अपनी एक जूतों की दुकान भी खोल ली। फिर इनका नियम हो गया कि प्रतिदिन जो पहली जोड़ी बिकेगी उसकी कीमत साधु-संतों में खर्च की जाएगी। इसके अतिरिक्त कोई महात्मा, साधु-सत्संगी जूती, चप्पल लेने आ गया तो उनकी सेवा मूल्य लिए बिना ही जाएगी। धर्मपत्नी सचमुच धार्मिक थी। स्वामी से ना कभी कोई मांग ना कोई शिकायत। ना साधु सेवा में कभी कोई बाधा डालती थी।

भक्त रविदास भजन कीर्तन में रुचि रखते थे। अपने बनाए पद भी सुनाया करते। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में अर्जुन को नाम स्मरण करते हुए युद्ध करने का आदेश दिया था। सन्त रविदास ने भी अपना सब कर्म करते हुए भगवान के नाम का जप करने की आदत बना ली। दिन-रात नाम पद करने से वो एक सिद्ध माहत्मा बन गए थे। उनके पदों में यह स्पष्ट दिखाई पड़ता है। यहां तक कि परमात्मा और भक्त एक-दूसरे के पूरक सिद्ध कर दिए। भक्त के बिना भगवान भी अधूरा है। उनका एक पद तो अत्यन्त प्रसिद्ध हुआ जिसमें इस अनन्याश्रित संबंध को स्पष्ट किया गया है।

प्रभु जी! तुम चन्दन हम पानी,
जाकी अंग अंग वास समानी।
प्रभु जी! तुम घन वन हम मोरा,
जैसे चितवन चन्द्र चकोरा।।
प्रभु जी/ तुम दीपक हम बाती,
जाकी जोत बारै दिन राती।।
प्रभु जी! तुम मोती हम धागा,
जैसे सोनहि मिलत सुहागा।।
प्रभु जी! तुम स्वामी हम दासा,
ऐसी भक्ति करै रैदासा।।

इस पद में ईश्वर तथा भक्त का संबंध ऐसा घनिष्ठ बताया गया है कि दोनों एक-दूसरे के बिना अर्थहीन हैं। अर्थात् ईश्वर का ईश्वरत्व भी भक्ति से ही है। इस प्रकार निर्मल मनसा जाप से ही रैदास सिद्ध पुरुष हो गए थे। उनकी महिमा संतों भक्तों में ख्याति प्राप्त कर रही थी। एक बार एक धनी व्यक्ति प्रयागराज गंगा स्नान के लिए जा रहा था। उसने सोचा-भक्त

रविदास जी से मिलता चलूं। वह दुकान में आया। रविदास जी को बताया कि वह गंगा जी स्नान करने जा रहा है। रविदास जी से भी कहा। रविदास जी बोले, ''मैं माता को यहीं से प्रणाम कर रहा हूं। आप जा रहे हो तो मेरी ओर से यह भेंट मां गंगा को भेंट कर देना। ऐसा कह कर रविदास जी ने अपनी मिट्टी के पात्र में से एक चमड़े का गोल पहिया-सा निकाल कर दिया। यात्री ने लेकर रख लिया।

गंगा जी में स्नान करके उसने नारियल, पुष्प माला और प्रसाद मां गंगा को अर्पित किया। तभी उसे याद आया कि भक्त रैदास जी की भेजी हुई भेंट भी चढ़ानी है। उसने किनारे आकर थैले से वह भेंट निकाली, बोला ले गंगा माता। यह रैदास की ओर से भेंट। वह चकित हो गया। गंगा माता के जल में से एक हाथ निकला और भेंट स्वीकारी। फिर अपनी ओर से एक स्वर्ण व कंगन उस यात्री को दिया। आवाज भी आई, 'मेरी ओर से यह कंगन रविदास को प्रसाद स्वरूप दे देना।' यात्री ने कंगन ले लिया। लौटते हुए विचार आया कि भक्त रविदास इस कंगन का क्या करेगा। उसे मालूम भी नहीं होगा। यदि मैं इस कंगन को राजा को भेंट कर दूं तो मुझे अवश्य धन भी देंगे और सम्मान भी देंगे। कुछ देर मन में विचारों की ऊहापोह चली और अन्त में उसने इरादा पक्का कर लिया। वह काशी के राजा के पास गया और कंगन राजा को भेंट कर दिया। राजा प्रसन्न हुआ। राजमहल में जाकर राजा ने कंगन अपनी रानी को प्रेम से पहना दिया। रानी बोली-स्वामी! क्या आपको यह ध्यान नहीं रहा कि मेरे दो हाथ हैं। एक हाथ में कंगन और दूसरा खाली। राजा बोला- कोई बात नहीं, दूसरे हाथ का भी मंगवा देंगे। राजा ने दरबार में आकर उस व्यक्ति को बुलवाया। उसने सोचा राजा मेरा सम्मान करेगा। अतः आदेश पाते ही उपस्थित हुआ। राज से रानी की बात बताते हुए कहा, 'बहुत पसन्द आया कंगन पर रानी ने दूसरे हाथ के लिए भी कंगन मंगवाया है।' इस बेचारे को तो सांप सूंघ गया। राजा के बहुत बार पूछने प्र उसने सच उगल दिया। अपनी असमर्थता दिखाते हुए बताया कि उसके साथ का दूसरा कंगन वह ला ही नहीं सकता। तब राजा और वह व्यक्ति दोनों भक्त रैदास की दुकान पर पहुंचे। भक्त रैदास ने राजा का खूब स्वागत किया और योग्य सेवा बताने को कहा। राजा ने सारी बात दोहराते हुए कहा कि रानी ने ठीक वैसा ही कंगन दूसरे हाथ के लिए मांगा है। रैदास जी ने अपने जल से भरे मिट्टी के पात्र में हाथ घुमाया और ठीक वैसा ही कंगन निकाल कर राजा को दे दिया। सब चकित थे। राजा और यात्री ने रैदास का शिष्यत्व स्वीकार किया। उनकी ख्याति सर्वत्र फैल गई ऐसे चमत्कारी परन्तु निरभिमानी महात्मा थे रविदास जी। इनकी जयंती पर हम नाम जप के महत्व को जानें और उनके सेवा पथ पर अपना जीवन आगे बढ़ाएं। ❐

जीवनोपयोगी पठनीय सामग्री

'सेवा समर्पण' का जनवरी अंक भी सदैव की तरह जीवनोपयोगी पठनीय सामग्री से भरपूर है। आवरण पृष्ठ भारतीयता की सही तस्वीर प्रस्तुत करता है और 'सेवा भारती' द्वारा किये जा रहे कार्यों का सार प्रस्तुत करता है। वास्तव में हमें फिटनेस इंडस्ट्रीज नहीं, अपितु अन्दर की उमंगें और सक्रियता ही युवा बनाए रखती है। अनुभव के आधार पर सेवा के अधिक से अधिक अवसरों की खोज की जानी चाहिए। 'सखि, वसन्त आया,' मन को बहुत-बहुत भाया। सेवा भारती, रोहिणी जिला द्वारा वसन्त पंचमी के दिन प्रशान्त विहार समुदाय भवन में नौ अभावग्रस्त कन्याओं के सामूहिक विवाह को देखकर अतीव आनन्द प्राप्त हुआ। बहुत सुन्दर आयोजन था। रोहिणी जिले के समक्ष कार्यकर्ता बधाई के पात्र हैं।

- कृष्ण लाल भाटिया 'शिक्षार्थी'

श्रीगुरुजी के जन्मदिवस पर (19 फरवरी) विशेष

वे महामानव थे

■ आचार्य मायाराम 'पतंग'

परम पूजनीय श्रीगुरुजी का पूरा नाम था श्री माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर। श्रीगुरुजी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक थे। श्रीगुरुजी उपनाम उनके छात्रों ने ही दिया था। संघ में तो पूज्य भगवा ध्वज को ही गुरु स्थान दिया गया है। श्रीगुरुजी का जन्म 19 फरवरी, 1906 को नागपुर के निकट रामटेक में हुआ। इनके पूज्य पिता सदाशिव राव जी एक अध्यापक थे। उन्होंने बचपन से ही माधव को गणित तथा अन्य विषयों में पारंगत करा दिया था। भोजन करते समय भी वे कुछ प्रश्न पूछते या बताते रहते थे। जब माधव चौथी कक्षा में थे तो उनके विद्यालय में एक बार निरीक्षक महोदय पधारे। माधव को कुछ दिन ज्वर था इसलिए वह विद्यालय नहीं आए थे। प्रधानाध्यापक ने एक छात्र भेजकर उन्हें घर से बुलवाया। निरीक्षक महोदय ने कक्षा में जितने प्रश्न पूछे उन सबके उत्तर में माधव का हाथ लगातार खड़ा रहा। उन्होंने सब प्रश्नों के सटीक उत्तर दिए।

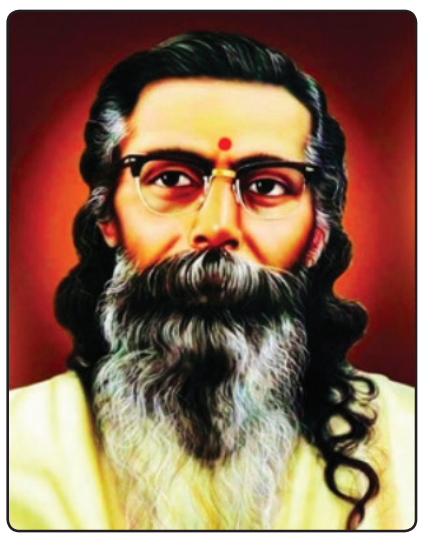

इसके बाद निरीक्षक जिन कक्षाओं में गए प्रधानाध्यापक जी ने सभी कक्षाओं में पिछले द्वार से बालक माधव को वहां पहुंचा दिया। बाद में निरीक्षक महोदय ने मुख्याध्यापक से कहा कि सभी कक्षाओं में एक ही बालक ऐसा है जो प्रश्नों के सही उत्तर देता है। तब प्रधानाचार्य ने माधव को बुलाकर मिलवाया और बताया कि आठवीं कक्षा तक के सभी प्रश्नों का उत्तर देने वाला यह माधव नाम का विलक्षण बुद्धि वाला बालक है। निरीक्षक चकित रह गए। उन्होंने माधव की बहुत सराहना की।

श्रीगुरुजी का ध्यान और उनकी एकाग्रता के अनेक उदाहरण मिलते हैं। जब वे बीएससी में पढ़ते थे तब वे बीए के छात्रों को पढ़ाया करते थे। उनके विषय की पुस्तक पढ़कर उन्हे समझा देते थे। एक बार माधव के पैर में बिच्छू ने काट लिया। सभी छात्र चकित थे क्योंकि माधव फिर भी अध्ययन कर रहे थे। मित्रों ने पूछा, आपको तो बिच्छू ने काटा है फिर इतना कष्ट सहकर कैसे पढ़ पा रहे हो। माधव ने कहा, बिच्छू ने तो पैर में कांटा है सिर में नहीं। इससे सिद्ध होता है कि माता जी का ध्यान और उनकी एकाग्रता कितनी घनी थी कि वह भयानक कष्ट में भी पढ़ पा रहे थे। उनकी सहन शक्ति भी अद्‌भुत थी। श्रीगुरुजी ने एमएससी प्राणी विज्ञान में की तथा फिशरीज में पीएचडी डिग्री ली। फिर वहीं काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में प्राध्यापक बन गये। काशी में ही श्री भाऊराव देवरस के सम्पर्क से वे स्वयंसेवक बने। अध्यात्म में उनकी रुचि जन्मजात थी। अत: वे स्वामी विवेकानंद साहित्य से प्रभावित होकर श्री रामकृष्ण मिशन में जाकर स्वामी अखण्डानन्दजी के शिष्य बन गये। स्वामी जी के स्वर्गवास के पश्चात् वे नागपुर आए तो डाक्टर केशवराव बलिराम हेडगेवार जी के घनिष्ठ संपर्क में आए। संघ के लक्ष्य तथा कार्य-प्रणाली को गहराई से समझा तथा डाक्टर हेडगेवार जी की सेवा में लग गये। श्रीगुरुजी की विलक्षण बुद्धि, ध्येय-निष्ठा एवं प्रवीणता पहचान कर डाक्टर हेडगेवार जी ने उन्हें सरसंघचालक का महान दायित्व सौंप दिया।

जून, 1940 में डॉ हेडगेवार के पश्चात श्रीगुरुजी ने जीवन पर्यन्त सरसंघचालक का दायित्व कुशलतापूर्वक निभाया। 33 वर्ष तक निरंतर पूरे भारत का छियासठ बार भ्रमण किया। संघ कार्य का प्रचार तथा विस्तार किया। जीवन के विविध क्षेत्रों में भी संघ शाखाएं एवं संस्थाएं स्थापित कीं।

5 जून, 1973 को उनका स्वर्गलोक गमन समस्त हिन्दू जनता को शोक सागर में डुबा गया। उनकी साध ना का सुफल हम सभी को लक्ष्य की ओर निरंतर बढ़ने की प्रेरणा दे रहा है।

मेरा सौभाग्य है कि जीवन में कई बार परम पूजनीय श्रीगुरुजी जी के प्रत्यक्ष दर्शन कर सका। 1958 में मैं रामजस स्कूल, आनन्द पर्वत, दिल्ली में संघ शिक्षा वर्ग में प्रबंधक था। वहां तीन दिन तक बाबा साहब आप्टे जी तथा तीन दिन श्रीगुरुजी पधारे थे। इसके बाद जब भी दिल्ली में श्रीगुरुजी की बैठक या बौद्धिक हुए, मैं सदैव उपस्थित रहा।

1961 में मैं प्रथम वर्ष का संघ शिक्षण ले रहा था। श्रीगुरुजी पूर्ण गणवेश में आए, सभी गण सक्रिय थे। अपने गण का मैं अग्रसर था। श्रीगुरुजी ने मेरा नाम पूछा तथा दण्ड की क्रमिका दो स्वयं करके दिखाई। 1965 में मुझे फिर वर्ग में प्रबंधक बनकर सेवा का अवसर मिला। तब श्रीगुरुजी ने प्रबंधकों की बैठक लाला हंसराज गुप्ता जी की कोठी में ली। सभी क्रमशः खड़े होकर अपना नाम बताते थे। मेरी बारी आई तो मैंने बताया रविभूषण। तुरंत श्रीगुरुजी बोले, मायाराम बहुत प्यारा नाम है, आसान भी है, आपने नाम क्यों बदला। मैं निरुत्तर होकर बैठ गया। परंतु हैरान था कि इतने वर्षो बाद भी मेरे जैसे साधारण व्यक्ति का नाम श्रीगुरुजी को कैसे याद रहा, जबकि इस बीच उन्हें सारे देश में भ्रमण करते हुए हजारों व्यक्ति मिले होंगे। उनकी विलक्षण बुद्धि, दूरदृष्टि और अनुपम साधना से स्पष्ट है कि वे महापुरुष थे। ❐

वनवासी रक्षा परिवार का प्रभावी वार्षिकोत्सव

वनवासी रक्षा परिवार फाउण्डेशन ने रोहतास नगर, दिल्ली में अपना वार्षिक उत्सव मनाया। उपराह्न 3.00 बजे आमंत्रित अतिथि आने लगे तो महिलाओं की टोली मंच पर भजन गा रही थी। इसी बीच जो पहुंच रहे थे उनके लिए अल्पाहार एवं चाय का प्रबंध था। दीप प्रज्जवलित करके गायत्री मंत्र तथा ओंकार ध्वनि तीन बार सभी उपस्थित श्रोताओं से भी करवाई गई। प्रतिभा विकास केन्द्रों के आचार्यों के निर्देशन में विद्यार्थियों ने योग, व्यायाम, गीत एवं नृत्य के आकर्षक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। मंच पर फाउण्डेशन के प्रभारी वरिष्ठ प्रचारक वीरेन्द्र जी के साथ कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री विजय कुमार गोयल, श्री मयंक शेखर, आचार्य मायाराम पतंग, राज कुमार जी तथा जिले के अध्यक्ष सुरेश गुप्ता जी भी विराजमान हुए। सभी का स्वागत पटका पहनाकर तथा पुस्तकों के पैकेट भेंट करके किया गया। विधायक श्री जितेन्द्र महाजन, पूर्व विधायक श्री नरेश गौड़, श्री धर्मवीर नागर तथा कु पांचाल को भी सम्मानित किया गया। मयंक जी ने फाउण्डेशन के लक्ष्य की विस्तृत जानकारी दी। आचार्य मायाराम पतंग ने इस पवित्र कार्य में तन-मन-धन से भरपूर सहयोग देने के लिए सभी को प्रेरित किया। वीरेन्द्र जी ने संदेश दिया कि दूर-दराज के गांवों में कार्य चल ही रहा है। अब आवश्यकता महसूस हुई कि शहरी क्षेत्रों में भी अपनी भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार की कमी को पूरा करने में जुटना चाहिए। यह महान कार्य आप सभी के सहयोग से ही संभव है। उत्साहित होकर जिन श्रोताओं ने आर्थिक सहयोग दिया, उनका भी पटका पहनाकर मंच पर सम्मान किया गया। भाग लेने वाले बच्चों तथा उनके आचार्यों को भी पुरस्कृत किया गया। विजय कुमार गोयल जी ने कार्यक्रम की प्रशंसा करते हुए सभी को इस पावन कार्य में जुटने की प्रेरणा दी। सुरेश गुप्ता जी ने सभी को धन्यवाद दिया। ❐

बाल कविताएँ

■ दिविक रमेश

खुशी लुटाते हैं त्योहार

उपहारों की खुशबू लेकर
जब तब आ जाते त्योहार
त्योहारों का आना जैसे
टपटप टपटप माँ का प्यार

लेकिन सोचा तो यह जाना
सभी मनाते हैं त्योहार
सब को ही प्यारे लगते हैं
माँ की गोदी से त्योहार

फसलें खूब लहकती हैं तो
खेत मनाते हैं त्योहार
जब लद जाते फूल फली से
पेड़ मनाते हैं त्योहार

पानी से भर जाती है तब
नदियों का होता त्योहार
ठंडी में जब धूप खिले तो
सूरज का होता त्योहार

जिस दिन पेड़ नहीं कटते हैं
जंगल का होता त्योहार
और अगर मन अडिग रहे तो
पर्वत का होता त्योहार

अगर हादसा हो ना कोई
सड़क मनाती तब त्योहार
मार काट ना चोरी हो तो
शहर मनाता है त्योहार

पूरे दिल से खुशी लुटाते
कोई हो सब पर त्योहार
खिलखिल हँसते खुशियाँ लाते
लेकिन लगते कम त्योहार

अगर बीज इनके भी होते
खूब उगाते हम त्योहार
खुश होकर तब उड़ते जैसे
पंछी उड़ते बाघ कतार

खूब जोर से वर्षा आई

खूब जोर से वर्षा आई।
सबने लू से राहत पाई।
तू भी भीगी में भी भीगी।
जलती धरती भी मुस्काई।

बादल गरजा बिजली ने भी।
अपनी दुम थोड़ी चमकाई।
छिपते देखा भैया को तो।
इसी जोर से हमको आई।

खूब जोर से वर्षा आई।
जोर जोर से वर्षा आई।

हँसी फुदककर होंठों से जब
मूछों में आ देख समाई

एक रागिनी झूम झूम कर
मस्ती में मोलू ने गाई

भोलू भीगा और साथ में
उसका छप्पर, बकरी भींगी
आंगन की चक्की भी भीगी
चूल्हा भीगा लकड़ी भीगी
पर भोलू को होश कहाँ है
उसे नाचना है जी भरकर
छम-छम छम-छम छम

वर्षा की बूंदों से बढ़कर
मैं भी क्यों उसकी मस्ती में
कड़ी अड़ंगी अभी लगाऊँ
गए बरस सा वह जाएगा
घर छप्पर क्यों उसे बताऊँ

जब तक खुश है, रहने ही दूँ
दु:ख को तो फिर आना ही है।
मोलू का भी किसे होश है
जो जैसा, चलते जाना है

देखो मगर उधर तो देखो
भीगी बिल्ली घर में आई
दुबक दुबक कर उस कोने में
बैठी हो जैसे शरमाई। ❐

एक भक्त की कहानी

भावग्राही भगवान् ने पुराना स्वेटर भी स्वीकारा

एक गाँव में एक बूढ़ी माई रहा करती थी। भगवान् श्रीकृष्ण के प्रति उसका बड़ा प्रेम था। प्रत्येक महीने बाँकेबिहारीजी के दर्शन के लिये वृन्दावन जाने का उसका नियम था।

एक बार की बात है, सर्दी का समय, जनवरी का महीना चल रहा था। एकाएक उसके मन में भाव आया कि बाँकेबिहारी को पहनाने के लिये एक स्वेटर तैयार करके ले चलूँ। भाव तो था, पर रुपये का अभाव भी था। गरीबी में भी भक्ति तो होती ही है। अब माई के अन्दर भाव तो हुआ, परंतु नया स्वेटर बनाने के लिये ऊन कैसे प्राप्त हो? रुपया है नहीं। उसके मन में भाव आया अरे! नया ऊन नहीं तो पुराने स्वेटर के ऊन को निकालकर गाँठ दे देकर नया स्वेटर बनाया जा सकता है। उसने स्वेटर बना दिया। भगवान् तो भावग्राही हैं।

जब वह वृन्दावन के लिये चली तो एक थैले में पुराने ऊन वाला स्वेटर भी ले लिया। वह वृद्धा रास्ते में सोचने लगी कि भगवान् तो दयालु हैं, पहन लेंगे, परंतु पुजारीजी स्वीकार करें कि न करें।

मंदिर पहुँचकर उसने थैला पुजारीजी को पकड़ाया। पुजारीजी ने सोचा कि कोई नया शाल, चादर होगा। देखा तो पुराना स्वेटर लेकर वृद्धा आयी है। पण्डितजी मन में सोचने लगे- 'ये माई पागल है। दिल्ली, मुम्बई, कोलकाता से बड़े-बड़े सेठ-साहूकार बाँकेबिहारी के लिये शाल, स्वेटर लाते हैं। अब ठाकुरजी को पुराना स्वेटर कैसे पहनायें?'

पुजारी ने रात्रि में ठाकुरजी को जब शयन कराया तो ठाकुरजी सपने में कहने लगे- 'पुजारीजी! सर्दी लग रही है।' पुजारीजी झट-पट उठे और कहने लगे- 'अरे महाराज! ये शाल-स्वेटर तो मुम्बई वाले सेठजी लाये थे। आपको ठण्डी लग रही है। कोई बात नहीं। कोलकाता वाले सेठजी का लाया स्वेटर पहना देता हूँ। उनका शाल और स्वेटर दोनों ही कीमती और खूब गरम हैं।' थोड़ी देर बाद पुजारीजी से ठाकुरजी ने सपने में आकर फिर कहा- 'पुजारीजी! सर्दी लग रही है।' पुजारीजी को थोड़ी झुंझलाहट हुई, बोले- 'महाराजजी! इतने कीमती शाल, स्वेटर से सर्दी नहीं जा रही है तो जो गाँव की बुढ़िया माई पुराने ऊन का स्वेटर लायी है, वही पहना देता हूँ।'

पुजारीजी ने जैसे ही बुढ़िया माई का पुराना स्वेटर पहनाया, ठाकुरजी को नींद भी आ गयी और सर्दी भी दूर हो गयी। वस्तु-पदार्थ से भगवान् राजी नहीं होते। भगवान् भीतर का भाव, नीयत देखते हैं। ❐

अध्ययन कक्ष का उद्घाटन

यमुना विहार विभाग, सेवा भारती, माता जीवनी बाई सेवा केन्द्र, जिला ब्रह्मपुरी पर मकर संक्रान्ति के अवसर पर 14 जनवरी, 2023 को लाइब्रेरी (अध्ययन कक्ष) का उद्घाटन श्रीमती प्रीति गुप्ता के कर कमलों से हुआ। इस कक्ष का निर्माण श्री नीरज गुप्ता के सहयोग से पूर्ण हुआ। इसमें एक साथ 26 शिक्षार्थी सुविधापूर्वक स्वाध्याय कर सकते हैं। इसमें प्रत्येक मेज पर लैपटॉप चलाने के लिए वाई फाई एवं विद्युत प्लग की सुविधा है। शांतिपूर्ण वातावरण में एकाग्रचित होकर विद्यार्थी अध्ययन कर सकते हैं, वह भी नाम मात्र का शुल्क देकर। कार्यक्रम श्री अशोक बंसल, अध्यक्ष, यमुना विहार विभाग की गरिमामय अध्यक्षता में, विभाग एवं जिला कार्यकारिणी एवं अन्य बन्धु-भगिनियों की उपस्थिति में संपन्न हुआ। श्री बंसल ने क्षेत्र में सेवा भारती द्वारा चलाए जा रहे प्रकल्पों जैसे सिलाई, सौन्दर्य विधा, कम्प्यूटर शिक्षा, चिकित्सा, मेहंदी, फैशन डिजाईनिंग, जरूरतमंदों के लिए वस्त्र उपलब्ध कराने के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी। मंच संचालन श्रीमती रमा उपाध्याय ने किया। अंत में जलपान के पश्चात् सभा का विसर्जन हुआ।

– मुकेश मिश्रा

(अस्थि विसर्जन)

डोंगरे जी महाराज के जीवन का एक मार्मिक प्रसंग

■ शुकदेव

यह जानकर सुखद आश्चर्य होता है कि पूज्यनीय रामचन्द्र डोंगरे जी महाराज जैसे भागवताचार्य भी हुए हैं जो कथा के लिए एक रुपया भी नहीं लेते थे। मात्र तुलसी पत्र लेते थे।

ज्हाँ भी वे भागवत कथा कहते थे, उसमें जो भी दान-दक्षिणा, चढ़ावा आता था, उसे उसी शहर या गाँव में गरीबों के कल्याणार्थ दान कर देते थे। उन्होंने न तो कोई ट्रस्ट बनाया और न ही किसी को शिष्य। अपना भोजन स्वयं बना कर ठाकुर जी को भोग लगाकर प्रसाद ग्रहण करते थे। डोंगरे जी महाराज कलयुग के दानवीर कर्ण थे। उनके अन्तिम प्रवचन में चौपाटी में एक करोड़ रुपए जमा हुए थे, जो गोरखपुर के कैंसर अस्पताल के लिए दान किए गए थे। स्वयं कुछ नहीं लिया।

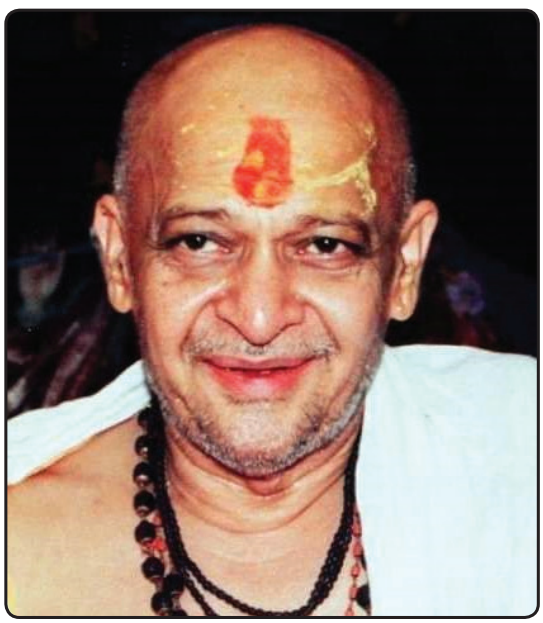

डोंगरे जी महाराज की शादी हुई थी। प्रथम रात के समय उन्होंने अपनी ध र्मपत्नी से कहा था कि देवी मैं चहाता हूं कि आप मेरे साथ 108 भागवत कथा का पारायण करें, उसके बाद यदि आपकी इच्छा होगी तो हम गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करेंगे।

इसके बाद जहाँ-जहाँ डोंगरे जी महाराज भागवत कथा करने जाते, उनकी पत्नी भी साथ जातीं। 108 भागवत पूर्ण होने में करीब सात वर्ष बीत गए।

तब डोंगरे जी महाराज पत्नी से बोले, अब अगर आपकी आज्ञा हो तो हम गृहस्थ आश्रम में प्रवेश कर संतान उत्पन्न करें। इस पर उनकी पत्नी ने कहा, आपके श्रीमुख से 108 भागवत श्रवण करने के बाद मैंने गोपाल को ही अपना पुत्र मान लिया है, इसलिए अब हमें संतान उत्पन्न करने की कोई आवश्यकता नहीं है।

धन्य हैं ऐसे पति-पत्नी, धन्य है उनकी भक्ति और उनका कृष्ण प्रेम। डोंगरे जी महाराज की पत्नी आबू में रहती थीं और डोंगरे जी महाराज देश-दुनिया में भागवत रस बरसाते थे। पत्नी की मृत्यु के पांच दिन पश्चात् उन्हें इसका पता चला। वे अस्थि विसर्जन करने गए, उनके साथ मुंबई के बहुत बड़े सेठ थे-रतिभाई पटेल जी। उन्होंने बाद में बताया कि डोंगरे जी महाराज ने उनसे कहा था कि रति भाई मेरे पास तो कुछ है नहीं और अस्थि विसर्जन में कुछ तो लगेगा, क्या करें?

फिर महाराज आगे बोले थे, अभी सेवा करो, पत्नी का मंगलसूत्र और कर्णफूल, पड़ा होगा उसे बेचकर जो मिलेगा उसे अस्थि विसर्जन क्रिया में लगा देते हैं। सेठ रतिभाई ने रोते हुए बताया था जिन महाराजश्री के इशारे पर लोग कुछ भी करने को तैयार रहते थे, वह महापुरुष कह रहा था कि पत्नी के अस्थि विसर्जन के लिए पैसे नहीं हैं। हम उसी समय मर क्यों न गए। फूट-फूट कर रोने के अलावा मेरे मुँह से एक शब्द नहीं निकल रहा था। ऐसे महान विरक्त महात्मा संत के चरणों में कोटि-कोटि नमन भी कम है। ❐

मदद

■ तरुण गुप्ता

मोची का काम करने वाले व्यक्ति को रात में भगवान ने सपना दिया और कहा कि कल सुबह मैं तुझसे मिलने तेरी दुकान पर आऊंगा। मोची की दुकान काफी छोटी थी और उसकी आमदनी भी काफी सीमित थी। खाना खाने के बर्तन भी थोड़े से थे। इसके बावजूद वो अपनी जिंदगी से खुश रहता था। एक सच्चा, ईमानदार और परोपकार करने वाला इंसान था। इसलिए ईश्वर ने उसकी परीक्षा लेने का निर्णय लिया।

मोची ने सुबह उठते ही तैयारी शुरू कर दी। भगवान को चाय पिलाने के लिए दूध, चायपत्ती और नाश्ते के लिए मिठाई ले आया। दुकान को साफ कर वह भगवान का इंतजार करने लगा। उस दिन सुबह से भारी बारिश हो रही थी। थोड़ी देर में उसने देखा कि एक सफाई करने वाली बारिश में पानी में भीगकर ठिठुर रही है। मोची को उसके ऊपर बड़ी दया आई और भगवान के लिए लाए गये दूध से उसको चाय बनाकर पिलाई। दिन गुजरने लगा। दोपहर बारह बजे एक महिला बच्चे को लेकर आई और कहा कि मेरा बच्चा भूखा है इसलिए पीने के लिए दूध चाहिए। मोची ने सारा दूध उस बच्चे को पीने के लिए दे दिया। इस तरह से शाम के चार बज गए। मोची दिन भर बड़ी बेसब्री से भगवान का इंतजार करता रहा। तभी एक बूढ़ा आदमी जो चलने से लाचार था आया और कहा कि मैं भूखा हूं और अगर कुछ खाने को मिल जाए तो बड़ी मेहरबानी होगी। मोची ने उसकी बेबसी को समझते हुए मिठाई उसको दे दी। इस तरह से दिन बीत गया और रात हो गई।

रात होते ही मोची के सब्र का बांध टूट गया और वह भगवान को उलाहना देते हुए बोला, ''वाह रे भगवान! सुबह से रात कर दी मैंने तेरे इंतजार में लेकिन तू वादा करने के बाद भी नहीं आया। क्या मैं गरीब ही तुझे बेवकूफ बनाने के लिए मिला था।''

तभी आकाशवाणी हुई और भगवान ने कहा, ''मैं आज तेरे पास एक बार नहीं, तीन बार आया और तीनों बार तेरी सेवाओं से बहुत खुश हुआ। और तू मेरी परीक्षा में भी पास हुआ है, क्योंकि तेरे मन में परोपकार और त्याग का भाव सामान्य मानव की सीमाओं से परे है।''

शिक्षा:- किसी भी मजबूर या ऐसा व्यक्ति जिसको आपकी मदद की जरूरत है उसकी मदद जरूर करना चाहिए, क्योंकि शास्त्रों में कहा गया है कि 'नर सेवा ही नाराायण सेवा है।' और मदद की उम्मीद रखने वाले, जरूरतमंद और लाचार लोग धरती पर भगवान की तरह होते हैं, जिनकी सेवा से सुकून के साथ एक अलग संतुष्टि का एहसास होता है। ❐

(लेखक सेवा भारती, दिल्ली के संरक्षक हैं)

मेरा भारत महान

– विनीता अग्निहोत्री

अनेक धर्म हैं, अनेक जातियां, फिर भी एक समान।
जहां हर दिल में और हर मन में, रहते हैं भगवान।।

खड़ा हिमालय रक्षा करता, जो है इसी शान।
बहती नदियां और वन कानन, हैं सब इसी पहचान।।

स्वर्ग से भी बढ़कर सुन्दर, कश्मीर है इसकी शान।
जिस पर कु-दृष्टि रखता है, पड़ोसी देश पाकिस्तान।।

उसका सामना वीरता से करते, देश के वीर जवान।
ऊँचा किया नाम देश का, जिन्हें जानता जग जहान।।

श्री गीता-रामायण को पढ़कर, होते हैं चरित्र निर्माण।
और सम्मान से देखा जाता है, सारा हिन्दुस्तान।।

हर विद्यालय हर दफ्तर में, गाया जाता है राष्ट्रगान।
ऐसा भारत महान, ऐसा भारत महान।। ❐

पूर्वी विभाग की गतिविधियाँ

■ भारती बंसल

- 2022 के अन्त में गांधी नगर जिले ने सिख साहिबजादों के बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में शकरपुर गुरुद्वारे में लंगर सेवा में कार्यकर्ताओं ने अपना सहयोग दिया। सोनिया कैम्प में माधव सेवा संस्था (श्री रमेश गुप्ता) के सहयोग से कालीबाड़ी के बच्चों को स्वेटर वितरित किए गए।
- 9 जनवरी को शाहदरा जिले के मनोरंजन केन्द्र पर योग कक्षा के आरम्भ हेतु आर्य समाज के साथ मिलकर हवन किया गया। सेवितजनों को गर्म कपड़े वितरित किए गए।
- 12 जनवरी को स्वामी विवेकानन्द जयन्ती केन्द्रों पर मनाई गई। श्री रामनुज सेवा केन्द्र, श्मशान घाट के बच्चों ने अद्‌भुत रंगोली बनाने का प्रयास किया।
- शाहदरा जिले में 13 जनवरी को विधि जागरूकता कार्यक्रम आम्बेडकर केन्द्र मनोरंजन केन्द्र, कड़कड़डूमा गांव में आयोजित किया गया।

स्वास्थ्य जांच शिविरः-

- 15 जनवरी को कैलाश नगर सेवा विभाग के सौजन्य से हेडगेवार भवन गांधी नगर जिले में निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया।
- 15 जनवरी को ही आनन्द विहार सेवा बस्ती में आरएसएस आनन्द विहार नगर की ओर से शिविर का आयोजन किया गया।
- आरएसएस कृष्ण नगर के सौजन्य से 15 जनवरी को प्रातः 10 बजे श्री हनुमान मन्दिर आजाद नगर में जांच शिविर का आयोजन किया गया।
- आरएसएस शाहदरा के द्वारा भोलानाथ नगर में शाहदरा जिले में जांच शिविर का आयोजन किया गया।
- समाज सेवक निर्मल जी के सौजन्य से निःशुल्क नेत्र जांच शिविर विवेक विहार नगर में प्रातः 10.00 बजे आयोजित किया गया।
- 15 जनवरी को ही इन्द्रप्रस्थ जिले के 3 नगरों में मेडिकल कैम्प लगाया गया। यह कैम्प संघ बन्धु द्रोणाचार्य शाखा, बद्री विशाल शाखा और सेवा भारती के माध्यम से लगाया गया। समय 9 से 1 बजे तक रहा। इन सभी कैम्प में बड़े-बड़े अस्पताल जैसे कि मौलाना आजाद मेडिकल कॉलेज, राम मनोहर लोहिया, मैक्स अस्पताल (पटपड़गंज), मोंगा मेडिकल सेंटर, (कृष्णा नगर) प्रगति आई सेन्टर (कृष्णा नगर) के माानीय चिकित्सकों ने अपनी सेवाएं दीं।
- मकर संक्रान्ति के सुअवसर पर श्रीराम सेवा केन्द्र पर खिचड़ी का कार्यक्रम आयोजित किया गया। मकर संक्रान्ति का महत्व समझाया गया। कार्यकर्ताओं और सेवित जनों ने मिलकर खिचड़ी का आनन्द उठाया। ❐

काम, क्रोध, लोभ, मोह को त्यागकर
यदि मोक्ष के मार्ग पर आगे बढ़ना है तो सर्वप्रथम
'दया भाव और परोपकार'
को अपनाना होगा।

...जिन्हें काली माँ के दर्शन हुए

■ स्वाति पाठक 'स्वाति'

स्वामी रामकृष्ण परमहंस भारत के एक महान संत एवं विचारक थे। इन्होंने सभी धर्मों की एकता पर जोर दिया। उन्हें बचपन से ही विश्वास था कि ईश्वर के दर्शन हो सकते हैं अत: ईश्वर की प्राप्ति के लिए उन्होंने कठोर साधना और भक्ति का जीवन बिताया। स्वामी रामकृष्ण मानवता के पुजारी थे। इनकी बालसुलभ सरलता और मंत्रमुग्ध मुस्कान से हर कोई सम्मोहित हो जाता था। साधना के फलस्वरूप वह इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि संसार के सभी धर्म सच्चे हैं और उनमें कोई भिन्नता नहीं। वे ईश्वर तक पहुँचने के भिन्न-भिन्न साधन मात्र हैं।

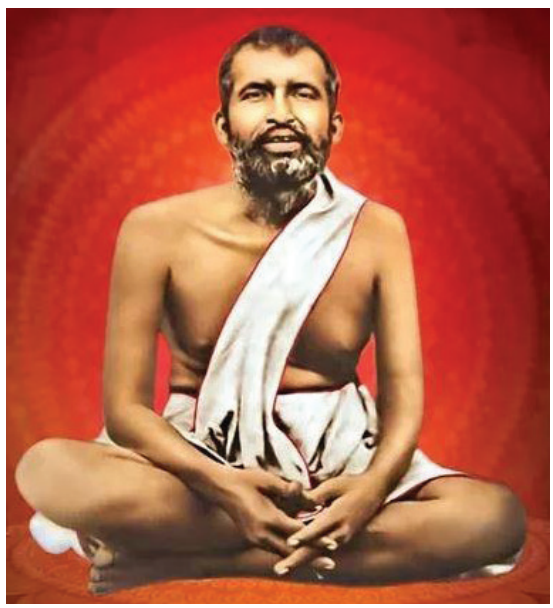

सात वर्ष की अल्पायु में ही गदाधर के सिर से पिता का साया उठ गया। ऐसी विपरीत परिस्थिति में पूरे परिवार का भरण-पोषण कठिन होता चला गया। आर्थिक कठिनाइयाँ आईं। बालक गदाधर का साहस कम नहीं हुआ। इनके बडे भाई रामकुमार चटोपाध्याय कोलकाता (उस समय कलकत्ता) में एक पाठशाला के संचालक थे। वे गदाधर को अपने साथ कोलकाता ले गए। रामकृष्ण का अन्तर्मन अत्यंत निश्छल, सहज और विनयशील था। संकीर्णताओं से वह बहुत दूर थे। अपने कार्यों में लगे रहते थे। सतत प्रयासों के बाद भी रामकृष्ण का मन अध्ययन-अध्यापन में नहीं लग पाया। 1855 में रामकृष्ण परमहंस के बड़े भाई राम9ष्ण को देवी प्रतिमा को सजाने का दायित्व दिया गया था। 1856 में रामकुमार की मृत्यु के पश्चात रामकृष्ण को काली मंदिर में पुरोहित के तौर पर नियुक्त किया गया।

रामकुमार की मृत्यु के बाद श्री रामकृष्ण ज्यादा ध्यान मग्न रहने लगे। वे काली माता की मूर्ति को अपनी माता और ब्रह्मांड की माता के रूप में देखने लगे। कहा जाता हैं कि श्री रामकृष्ण को काली माता के दर्शन ब्रह्मांड की माता के रूप में हुआ था। रामकृष्ण इसका वर्णन करते हुए कहते हैं-घर, द्वार, मंदिर और सब कुछ अदृश्य हो गया जैसे कहीं कुछ भी नहीं था और मैंने एक अनंत आलोक का सागर देखा, जोकि चेतना का सागर था। जिस दिशा में भी मैंने दूर दूर तक जहाँ भी देखा बस उज्ज्वल लहरें दिखाई दे रही थीं, जो एक के बाद एक मेरी तरफ आ रही थीं।

जन सामान्य में एक अफवाह फैल गयी थी कि दक्षिणेश्वर में आध्यात्मिक साधना के कारण रामकृष्ण का मानसिक संतुलन खराब हो गया है। रामकृष्ण की माता और उनके बड़े भाई रामेश्वर ने रामकृष्ण का विवाह करवाने का निर्णय लिया। उनका यह मानना था कि शादी होने पर गदाधर का मानसिक संतुलन ठीक हो जायेगा। शादी के बाद आई जिम्मेदारियों के कारण उनका ध्यान आध्यात्मिक साधना से हट जाएगा। रामकृष्ण ने खुद उन्हें यह कहा कि वे उनके लिए कन्या जयरामबाटी (जो कामारपुकुर से 3 मील दूर उत्तर पूर्व की दिशा में हैं) में रामचन्द्र मुखर्जी के घर पा सकते हैं। 1859 में 5 वर्ष की शारदामणि मुखोपाध्याय के साथ 23 वर्ष के रामकृष्ण का विवाह संपन्न हुआ। विवाह के बाद शारदा जयरामबाटी में रहती थीं और 18 वर्ष की होने पर वे रामकृष्ण के साथ दक्षिण

ोश्वर में रहने लगीं।

कुछ समय के बाद उनके बड़े भाई भी चल बसे। इस घटना से वे व्यथित हुए। संसार की अनित्यता को देखकर उनके मन में वैराग्य का उदय हुआ। अन्दर से मना न करते हुए भी श्रीरामकृष्ण मंदिर की पूजा एवं अर्चना करने लगे। दक्षिणेश्वर स्थित पंचवटी में वे ध्यानमग्न रहने लगे। ईश्वर दर्शन के लिए वे व्याकुल हो गये। लोग उन्हें पागल समझने लगे।

रामकृष्ण परमहंस जीवन के अंतिम दिनों में समाधि की स्थिति में रहने लगे। अत: तन से शिथिल होने लगे। शिष्यों द्वारा स्वास्थ्य पर ध्यान देने की प्रार्थना पर अज्ञानता जानकर हँस देते थे। इनके शिष्य इन्हें ठाकुर नाम से पुकारते थे। रामकृष्ण के परमप्रिय शिष्य विवेकानन्द कुछ समय हिमालय के किसी एकान्त स्थान पर तपस्या करना चाहते थे। यही आज्ञा लेने जब वे गुरु के पास गये तो रामकृष्ण ने कहा-वत्स हमारे आसपास के क्षेत्र के लोग भूख से तड़प रहे हैं। चारों ओर अज्ञान का अँधेरा छाया है। यहाँ लोग रोते-चिल्लाते रहें और तुम हिमालय की किसी गुफा में समाधि के आनन्द में निमग्न रहो क्या तुम्हारी आत्मा स्वीकारेगी। इससे विवेकानन्द दरिद्र नारायण की सेवा में लग गये। रामकृष्ण महान योगी, उच्चकोटि के साधक व विचारक थे। सेवा पथ को ईश्वरीय, पथ मानकर अनेकता में एकता का दर्शन करते थे। सेवा से समाज की सुरक्षा चाहते थे। गले में सूजन को जब डॉक्टरों ने कैंसर बताकर समाधि लेने और वार्तालाप से मना किया तब भी वे मुस्कराये। चिकित्सा कराने से रोकने पर भी विवेकानन्द इलाज कराते रहे। चिकित्सा के वाबजूद उनका स्वास्थ्य बिगड़ता ही गया।

अंत में वह दुख का दिन आ गया। 16 अगस्त, 1886 को सूर्योदय होने से कुछ ही वक्त पहले परम संत श्रीरामकृष्ण इस नश्वर देह को त्याग कर महासमाधि द्वारा प्रभु रूप में लीन हो गये। ❐

खेतड़ी

■ शुकदेव

आओ आज मैं और आप एक ऐतिहासिक यात्रा पर चलते हैं। राजस्थान के झुंझनू जिले का एक छोटा-सा ऐतिहासिक कस्बा जो अपने आप में स्वामी विवेकानंद जी से जुड़ी अनेकों यादें और संस्मरण संजोए हुए है। जहां आज भी विवेकानंद जी की कहानियां घर, मोहल्ले के बड़े-बुजुर्गो द्वारा बहुत ही उत्साह के साथ सुनाई जाती हैं। यहां केवल विवेकानंद जयंती ही नहीं, बल्कि उनसे जुड़े और भी ऐतिहासिक पलों को समारोहपूर्वक मनाया जाता है और पूरे कस्बे के लोग अपने बच्चों को व अन्य परिजनों को लेकर इन उत्सवों में भाग लेते हैं। नए-नए कपड़े पहन कर अच्छे से तैयार होकर ऐसे प्रसन्न-मुद्रा में एकत्र होते हैं जैसे किसी मेले में या विवाह समारोह में भाग लेने जा रहे हैं। बच्चों, महिलाओं और पुरुषों के चेहरे की चमक देखने ही बनती है। ऐसा जोश जैसे ये सब लोग स्वामी जी के परिजन हैं और उसी वंश परंपरा से जुड़े हुए हैं। महाराजा खेतड़ी ने ही स्वामी विवेकानन्द जी को शिकागो सर्वधर्म सम्मेलन में भेजने का सम्पूर्ण प्रबन्ध किया था।

यहां 12 जनवरी को स्वामी विवेकानन्द जयंती समारोह बहुत ही उल्लासपूर्ण और भव्य रूप से मनाई जाती है। छोटा-सा कस्बा है और सभी लोग परिवार सहित इस समारोह में उपस्थित होते हैं। बाजार में स्वामी जी की भव्य शोभायात्रा भी निकाली जाती है। कार्यक्रम बहुत ही प्रेरक और सादगीपूर्ण लेकिन सार्थक संदेश देने वाला होता है। ❐

लाल रंग का पत्थर

■ आचार्य राजन दीक्षित

एक बार एक व्यक्ति अकेला उदास बैठा कुछ सोच रहा था तभी उसके सामने भगवान प्रकट हुए। भगवान को अपने समक्ष देख उस व्यक्ति ने पूछा मुझे जिन्दगी में बहुत असफलताएं मिलीं भगवन, अब मैं निराश हो चूका हूँ. हे भगवन, मुझे बताओ कि मेरे इस जीवन की क्या कीमत है? भगवान ने उस व्यक्ति को एक लाल रंग का चमकदार पत्थर दिया और कहा, "जाओ इस पत्थर की कीमत का पता लगा लो, तुम्हें अपनी जिन्दगी की कीमत का भी पता चल जाएगा, लेकिन ध्यान रहे कि इस पत्थर को बेचना नहीं है।"

वह व्यक्ति उस लाल चमकदार पत्थर को लेकर सबसे पहले एक फल वाले के पास गया और कहा "भाई..ये पत्थर कितने का खरीदोगे?" फल वाले ने पत्थर को ध्यान से देखा और कहा, "मुझसे 10 संतरे ले जाओ और ये पत्थर मुझे दे दो।" उस व्यक्ति ने कहा कि नहीं मैं यह पत्थर बेच नहीं सकता। फिर वह व्यक्ति एक परचून वाले के पास गया और उसे कहा, "भाई यह लाल पत्थर कितने का खरीदोगे?" उसने कहा कि मुझसे 3 महीने का राशन ले जाओ और यह पत्थर मुझे दे दो, लेकिन भगवान् के कहे अनुसार उस व्यक्ति ने कहा कि नहीं मैं यह दे नहीं सकता। फिर वह व्यक्ति उस पत्थर को लेकर एक ज्वेलर्स की दुकान में गया जहाँ कई तरह-तरह के आभूषण पड़े हुए थे। उस व्यक्ति ने सुनार को वो पत्थर दिखाया और उस सुनार ने बड़े गौर से उस पत्थर को देखा और फिर कहा "मैं तुम्हे 1 करोड़ रुपये दूंगा, ये पत्थर मुझे बेच दो।" फिर उस व्यक्ति ने सुनार से क्षमा मांगी और कहा कि यह पत्थर मैं बेच नहीं सकता। सुनहार ने फिर कहा, "अच्छा चलो ठीक है, मैं तुम्हें 2 करोड़ दूंगा, यह पत्थर मुझे बेच दो।" सुनहार की बात सुनकर वह व्यक्ति चौंक गया लेकिन सुनार को मना कर वह आगे बढ़ गया और एक बड़े हीरा व्यापारी के पास पहुंचा। हीरे के व्यापारी ने उस लाल चमकदार पत्थर को पूरे 10 मिनट तक देखा और फिर एक मलमल का कपड़ा लिया और उस पत्थर को उस पर रख दिया। फिर उस व्यापारी ने अपना सर उस पत्थर पर लगा कर माथा टेका और कहा, "तुम्हें ये कहां मिला, यह इस दुनिया का सबसे अनमोल रत्न है। अगर इस दुनिया की पूरी दौलत भी लगा दी जाए तो इस पत्थर को नहीं खरीद सकता।"

इस दुनिया में हर मनुष्य के पास कोई न कोई ऐसा हुनर होता है जो सही समय पर निखर कर आता है, लेकिन उसके लिए परिश्रम और धैर्य की जरूरत है।

यह सुन वह व्यक्ति बहुत हैरान हुआ और सीधा भगवान के पास गया और उन्हें आपबीती बताई और फिर उसने भगवान से पूछा, "हे भगवन! अब मुझे बताइये कि मेरे इस जीवन की क्या कीमत है?"

भगवान ने कहा, "फल वाले ने, परचून वाले ने, सुनार ने और हीरे के व्यापारी ने तुम्हें जीवन की कीमत बता दी थी। हे मनुष्य, किसी के लिए तुम एक पत्थर के टुकड़े समान हो और किसी के लिए बहुमूल्य रत्न समान। हर किसी ने अपने अनुभव के अनुसार तुम्हें उस पत्थर की कीमत बताई लेकिन उस हीरे के व्यापारी ने इस पत्थर को पहचान लिया। ठीक उसी तरह कुछ लोग तुम्हारी कीमत नहीं पहचानते इसलिए जिन्दगी में कभी निराश मत होना।''

इस दुनिया में हर मनुष्य के पास कोई न कोई ऐसा हुनर होता है जो सही समय पर निखर कर आता है, लेकिन उसके लिए परिश्रम और धैर्य की जरूरत है। ❐

संवेदना भी है उपचार में सहायक

■ प्रतिनिधि

डॉक्टर हो या वैद्य उनका स्पर्श, उनकी संवेदना उपचार में उतनी ही सहायक होती है जितनी उनके द्वारा दी जाने वाली दवा। उपचार करते समय उनका सकारात्मक विश्वास कि यह रोग जल्दी ही ठीक हो जाएगा, रोगी के रोग को आधा कर देता है। लेकिन वर्तमान समय में डॉक्टर लोगों के पास संवेदना का अर्थ समझने की फुर्सत ही नहीं, उन्हें तो सिर्फ पैसों से मतलब है। इसी विषय पर अपनी लेखनी चलाई है प्रेम नारायण गुप्ता ने।

घर में ही बाहरी बैठक में वैद्यजी का शिफाखाना था। पुड़िया पेट में पहुँची नहीं कि मरीज को आराम आ गया। ऐसी शिफा थी वैद्यजी के हाथों में लालच तो जैसे छू भी नहीं गया था वैद्यजी को मरीज जो दे जाता प्यार से रख लेते। जो कुछ भी नहीं दे सकते थे उनको भी कभी बिना दवा दिये नहीं भेजते थे वैद्यजी। इसी कारण कस्बे में खूब आदर था। वैद्यजी ने खूब नाम कमाया और वैद्यगिरी की अपनी नेक कमाई से घर के सामने एक अच्छा-खासा जमीन का टुकड़ा भी खरीद लिया।

वैद्यजी के लड़के न तो कोई खास पढ़े-लिखे ही थे और न वैद्यजी का हुनर ही सीख सके। वैद्यजी पुत्रों के मंगल की कामना तथा कस्बे के लोगों की सेवा करते-करते एक दिन गोलोकवासी हो गए। वैद्यजी के पुत्रों से वैद्यगिरी तो हो सकती थी लेकिन पिता द्वारा खरीदे गए भूखण्ड को उन्होंने एक विशाल आधुनिक अस्पताल में परिवर्तित कर दिया, क्योंकि चिकित्सा करने के लिए हुनर की जरूरत पड़ती है अस्पताल खोलने के लिए नहीं। अनाप-शनाप दवाएँ, जाँच तथा और न जाने क्या-क्या, अस्पताल कस्बे के लोगों का खून चूसने का अड्डा बन गया।

कस्बे के हाईस्कूल के गणित के अध्यापक मास्टर रमाकान्त जो कभी वैद्यजी की एक पुड़िया से भले चंगे हो जाते थे बेचौनी से अस्पताल के कमरों में भाग-दौड़ कर रहे थे। उसका इकलौता पोता कई दिनों से इसी अस्पताल में भर्ती था। टेस्ट पर टेस्ट, महंगी महंगी दवाएं और डॉक्टरों की अनाप-शनाप फीस भरते-भरते मास्टरजी अस्पताल के कमरे की एक खिड़की के पास खड़े थे। उनकी नजर अस्पताल के सामने के हिस्से पर पड़ी।

अस्पताल के सामने वैद्यजी का जो पुराना मकान था उसे बेटों ने एक स्मारक में परिवर्तित कर दिया था, जिसमें वैद्यजी की एक प्रतिमा भी लगवा दी गई थी। मास्टरजी की नजर वैद्यजी की प्रतिमा पर पड़ी। उनके मन में वैद्यजी के प्रति श्रद्धा उमड़ आई। साथ ही उनकी आँखों से आँसू बहने लगे। आँसू वैद्यजी की स्मृति में उमड़ आए थे या उनकी अपनी बेबसी पर,

कहना मुश्किल है। इतने में आसमान में बादल घिर आए, अंधेरा-सा हो गया, बिजली चमकने लगी तथा बारिश होने लगी। मास्टरजी ने बिजली की चमक में साफ-साफ देखा, वैद्यजी की आँखों से भी मोटे-मोटे आँसुओं की धार बह रही थी।

आज किसी दिवंगत वैद्यजी, डॉक्टर, मुअल्लिज, तबीब अथवा चारागर की आँखों से मोटे-मोटे आँसुओं की बात छोड़िए एक बीमार, असहाय, पीड़ित अथवा कमजोर व्यक्ति को देखकर किसी जीते-जागते उपचारक की आँखों से भी एकाध आँसू नहीं टपकता।

एक डॉक्टर अथवा चिकित्सक का पेशा अत्यन्त संवेदनशील होता है। संवेदनशील इस अर्थ में कि उसकी संवेदना भी उपचार में सहायक होती है। रोग का निदान करते समय एक डॉक्टर का रोगी के शरीर का स्पर्श भी उपचारात्मक होता है। निदान के उपरान्त डॉक्टर का उपचार विषयक सकारात्मक रवैया सोने पर सुहाग का काम करता है। यदि डॉक्टर किसी रोग को बढ़ा-चढ़ाकर बताने की बजाय रोगी को ये विश्वास दिला दें कि उसका रोग तो मामूली सा है और वह बहुत जल्द ठीक हो जाएगा तो रोगी को ठीक होते देर नहीं लगती।

आज अधिकांश चिकित्सक रोगी को उसके रोग के विषय में सही न बताकर उसे बढ़ा-चढ़ाकर बताते हैं ताकि उससे अधिक से अधिक पैसा ऐठा जा सके। एक डॉक्टर अथवा चिकित्सक का पेशा अत्यन्त संवेदनशील होता है। इसका अर्थ यह भी है कि डॉक्टर को अपने रोगी से अत्यन्त सहानुभूति होती है और वह उसकी पीड़ा से रागात्मक सम्बन्ध बना लेता है। रोगी का उपचार उसके लिए चुनौती बन जाता है। जब वह इस चुनौती को स्वीकार कर रोगी के उपचार में सफलता प्राप्त करता है तो उसे अत्यन्त प्रसन्नता होती है।

लेकिन रोग की जड़ यह है कि आज डॉक्टर स्वयं रोगी हो गया। उसे सेवा में आनन्द की अनुभूति नहीं होती। उसे आनन्दाभूति होती है तो सिर्फ पैसे की प्राप्ति से उपचार प्रक्रिया को प्रभावशाली और सुचारू बनाने के लिए एक डॉक्टर को स्वयं रोगमुक्त होने की जरूरत है। इसके लिए डॉक्टर के लिए मात्र पैसे से प्राप्त आनन्द के इस दुष्चक्र को तोड़कर पुनः अपनी संवेदनशीलता को स्थापित करना अनिवार्य है। वैसे एक डॉक्टर ईमानदारी से भी पर्याप्त धनार्जन करने में समक्ष होता है, इसमें सन्देह नहीं। ❐

कर्मठ, ईमानदार, मेहनती, उदार व्यक्तित्व की पहचान

- हर जगह हमेशा, समय से पहले पहुंचना सशक्त अनुशासन को प्राथमिकता देना सिद्ध करता है।
- दिए गए कार्य को पूर्ण कुशलता, गुणवत्ता से करना तथा 100 प्रतिशत ग्राहक के प्रति देने के बाद ही घर जाना कार्य के प्रति प्रतिबद्धता दर्शाता है।
- प्रतिदिन कुछ नया सीखना तथा साथियों से साझा करना ही सामूहिक उन्नति का प्रतीक है।

निष्कर्ष

- हमारा शरीर तो आगे बढ़ने के लिए ही बना है। यह तो हम ही हैं जो खुद को आगे बढ़ने से रोक लेते हैं। हर पल शान्ति, सकारात्मकता से विचारें।
- हर कार्य को निस्वार्थ, निष्पक्ष सेवा भाव से ही करें- परिणाम उत्तम ही मिलेगा।
- परिस्थितियां, लोग बदलेंगे, परन्तु हमें अपनी उदारता, जवाबदेही, अच्छाई कभी नही छोड़नी, यही सच्चे योद्धा की पहचान है।

- डॉ. संजय जिन्दल

विश्वासघात

■ महावीर रवांल्टा

अनुराग का बचपन पहाड़ के एक छोटे से गाँव में बीता था। में के अ और शांता। उसका जन्म दोनों बहनों के बाद हुआ था, इसलिए वे उसे बहुत प्यार करती थीं। अपने दादा-दादी को उसने नहीं देखा था, सिर्फ माता-पिता से उनके बारे में सुना था कि वे भी उसे बहुत प्यार करते थे। उसके जन्म से पहले ही उनका देहांत हो चुका था।

उसका जन्मदिन होता या फिर गाँव का मेला-त्योहार, उसे मातापिता और बहनों से कोई-न-कोई उपहार अवश्य मिलता था। माता-पिता का स्नेह, दुलार और बहनों का प्यार उसे बढ़-चढ़कर मिलता। कहते हैं जीवन में कोई चीज बहुत बड़ी मात्रा में मिलने लगे तो उसे सँभालना हर किसी के वश में नहीं होता। वह जीवन में एकाएक मिली सफलता हो, धन-संपत्ति या फिर प्यार-दुलार के कारण वह कुछ जिद्दी भी होने लगा था। किसी चीज को पाने की जिद कर लेता तो सारा घर ही अपने सिर पर उठा लेता था।

उसके जिद्दी होने के कारण कभी-कभी तो कलह भी हो जाती थी। माता-पिता उसके जिद्दी होने का कारण एक-दूसरे से मिलने वाले लाड़-प्यार को जिम्मेदार ठहराते। सुधा दीदी को जब अवसर मिलता। जब वह उसे समझाने की कोशिश करती कि जिद्दी होना अच्छी बात नहीं होती। अनुराग इसके लिए उससे क्षमा माँगता कुछ दिन ठीक रहता, लेकिन फिर सबकुछ भूल वही गलती दोहरा देता। पढ़ाई से कहीं ज्यादा उसका मन खेलने-कूदने और गाँव के बच्चों के साथ मौज-मस्ती, इधरउधर घूमने में लगता। घर में होता तो टीण्वीण से चिपक जाता।

उसी की जिद के कारण पहली बार उनके घर में मोबाइल आया था। अब उसका मन मोबाइल चलाने के लिए बार-बार मचलता रहता था। सुधा और शांता को मोबाइल चलाने की इच्छा होती तो उन्हें अनुराग की खुशामद करनी पड़ती थी। ये उसे प्यार से पुचकारती, कुछ प्रलोभन अथवा उपहार देती, तब कहीं यह उन्हें मोबाइल चलाने के लिए देता था।

माँ उन्हें मोबाइल चलाते देखती तो भड़क उठती थी, "मोबाइल भैया को दे दो और तुम अपनी पढ़ाई करो!" मन मारकर उन्हें मोबाइल अनुराग की ओर बढ़ाना पड़ता और वे अपनी पुस्तकों के पन्ने उलटनेपलटने लगती। उनकी स्थिति देखकर उसे उन पर तरस आने लगता और माँ पर बहुत गुस्सा आता कि आखिर उसकी तरह उनकी भी तो मोबाइल चलाने की इच्छा होती होगी, लेकिन माँ उन्हें मौका नहीं देती थी। 'बेटाबेटी एक समान' का राग अलापने वाली माँ का यह बरताव उसे अच्छा नहीं लगता था। माता-पिता का व्यवहार उनके साथ अनुराग जैसा नहीं रहता था। वे उनसे हर समय कायदे से रहने की बात करते थे, जबकि उसे पूरी छूट थी। वह अपने दोस्तों के साथ कहीं भी आ-जा सकता था। उनके घर रुक सकता था, लेकिन सुधा और शांता दीदी को विद्यालय से लौटाने में थोड़ी सी भी देर हो जाती थी तो उनसे कई सवाल पूछे जाते थे और संतुष्ट हो जाने के बाद ही वे उनकी अदालत से बरी हो पाती थी।

"इन्हें भी तो खेलने-कूदने दिया करो, छोटी बच्चियाँ हैं। इनका भी तो मन करता होगा कि ये भी खुले आकाश में पंछियों की तरह कुछ पल उड़ान भरें।" कभी-कभार पिता को उन पर प्यार व तरस आता तो वे माँ से पैरवी करते।"

"क्यों नहीं इन्हें खूब उड़ने दो। राधा की बेटी की तरह उड़ान भर ली तो फिर मत कहना किण्ण्ण" माँ के इतना कहने के बाद पिता के पास उनके चुप्पी ओढ़ने के सिवा कोई राह नहीं बचती थी।

उनके घर से कुछ दूरी पर ही राधा चाची का घर था। उनकी लाड़प्यार में पली बेटी सुमन उन्हें आते-जाते समय रास्ते में खड़ी मिल जाती थी। वह जितनी सुंदर थी, उतनी ही मिलनसार और हसमुख भी थी। 'दीदी नमस्ते!' कहने पर वह 'कैसे हो काकू?' कहती हुई उसे प्यार से चूम लेती थी और फिर वह

उसकी ओर हाथ हिलाकर आगे बढ़ जाता था। एक दिन वह बिना बताए कहीं गायब हो गई। बहुत दिनों बाद पता चला उसने भागकर किसी लड़के के साथ शादी कर ली थी। इस घटना के बाद गाँव के लोग अपनी बेटियों पर अघोषित पहरा देने लगे थे।

"मेरी तरह आप सुधा और शांता दीदी को खेलने-कूदने और घुमनेफिरने की छूट क्यों नहीं देतीं?'' एक दिन उसने माँ से पूछ ही लिया था।''

"इसलिए कि तू लड़का है और वे लड़कियाँ हैं। उन्हें ब्याहकर पराए घर जाना है।'' उसने अनुराग को समझाने की कोशिश की थी।

"तो क्या हुआ?''

'' उन्हें जाकर दूसरा घर सँभालना है। अभी से नेक चाल-चलन की सोख हम नहीं देंगे तो उनकी ससुराल वाले इसके लिए सारी उम्र हमें कोसते रहेंगे।'' माँ ने जो कुछ कहा था, वह अब उसकी समझ से परे थे।

"ब्याह के बाद वे हमारे घर नहीं रहेंगी?'' उसने बालसुलभ जिज्ञासा भरा प्रश्न पूछा था।

"नहीं रे, ब्याहने के बाद कौन बेटी अपने मातापिता के घर रहती है। उन्हें अपने पति और साससससुर के साथ अपनी ससुराल रहना होता है।''

"तब मैं यहाँ अकेला रह जाऊँगा?''

"अरे पगले, तू अकेला नहीं रहेगा। तेरा भी तो व्याह होगा, बहू आएगी, बच्चे होंगे और हम भी तो तुम्हारे साथ रहेंगे।" माँ ने उसका गाल सहलाते हुए उसे प्यार से जैसा सारी दुनियादारी समझाने का प्रयास किया था। उस समय वह कुछ अधिक नहीं समझ सका था, लेकिन अब सबकुछ समझ आ रहा था।

सुधा और शांता के साथ उसकी पढ़ाई का सिलसिला भी जारी रहा। पाँचवीं के बाद आगे की पढ़ाई के लिए उन्हें निकट के राजकीय इंटर कॉलेज में दाखिला लेना पड़ा, फिर इससे आगे की पढ़ाई के लिए अनुराग को देहरादून भेजा गया और बहनों को गाँव के सबसे नजदीक के राजकीय महाविद्यालय में पढ़ने भेजा गया था। इसके पीछे माता-पिता की यही सोच थी कि अपने घर का रुखासूखा खाकर पढ़ाई कर लेंगी और अपनी नजरों के सामने भी रहेंगी।

देहरादून में दाखिला लेने के बाद अनुराग अपने सहपाठी प्रशांत के साथ कमरा लेकर रहने लगा। उसे घर से मोबाइल मिल चुका था, लेकिन दूसरे साथियों की तरह अब उसकी रुचि मोबाइल चलाने में नहीं रह गई थी। इसका कारण प्रशांत था। वह गाँव से अपने साथ बाल-पत्रिकाएँ पुस्तकें लेकर आता था और उसे पढ़ने के लिए देता था। उसे पढ़ने में उसे पता चला था कि वे भी बच्चों के लिए कविताएँ व कहानियाँ लिखते कुछ खूब मजा आने लगा था। एक बार प्रशांत के पिता उन्हें मिलने आए, तभी रोहन हैं। उनकी बातें सुनकर अनुराग बहुत प्रभावित हुआ था और मन में इच्छा जगने लगी थी कि वह भी उनकी तरह कभी कुछ लिखे। पढ़ाई के साथ लोग है और उसने कभी-कभार कुछ लिखने का प्रयास भी किया।

वे जिस मकान में किराए पर रहते, उनका एक बेटा था- रोहन। रोहन मुश्किल से आठ-नौ वर्ष का होगा। बेहद चुलबुला और हंसमुख। उसे जब मौका मिलता खेलते, टहलते हुए उनके कमरे में दाखिल हो जाता। कुछ देर उनसे बातें करता और फिर वापस लौट जाता। उसका यों एकाएक उनके कमरे में आना और फिर चला जाना किसी ताजा हवा के झोंके की तरह उन्हें ताजगी से भर देता। पढ़ाई का तनाव व बोझ को भूलकर उनके लिए वे क्षण विशुद्ध मनोरंजन से भरपूर हो जाते।

एक दिन वह सुबह ही उनके कमरे में पहुँचा। वह छुट्टी का दिन था।

"गुड मॉर्निंग भैया!'' उसने आते ही कहा तो उन्होंने उसका जवाब अपने अंदाज में दिया था। "पता है भैया आज क्या है?'' उसने किसी पहेली की तरह उनसे पूछा था।

"रविवार, और क्या?'' प्रशांत का उत्तर था।

"मालूम है, लेकिन और क्या है?''

"नहीं मालूम, तुम्हीं बता दो न!'' अनुराग ने एकदम नासमझ होने का अभिनय करते हुए कहा था। '' बता दूँ?''

"हाँ, अब तो बता ही दो। "

"आज मेरा बर्थडे है। आज आपका खाना हमारे घर पर होगा।'' उसने एक ही साँस में कह डाला था।

'' 'अरे बर्थडे ! चलो हैप्पी बर्थडे टू यू!'' अनुराग के मुँह से निकला।

"हैप्पी बर्थडे रोहन!'' प्रशांत ने भी बधाई दी।

"थैंक्यू भैया! आज आपका खाना हमारे घर पर होगा।'' वह चहका।

"हमारा खाना तुम्हारे घर पर होगा, तुम्हें कैसे मालूम?'' प्रशांत ने पूछा।

"पापा मम्मी से बोल रहे थे।'' चहकते हुए रोहन ने कहा और फिर खेलता-कूदता हुआ कमरे से बाहर निकल गया।

कुछ देर बाद रोहन की माँ कमरे में आई तो 'चाचीजी प्रणाम!' कहते हुए उन्होंने उसके चरण स्पर्श कर लिए थे।

"जीते रहो। आज रोहन का जन्मदिन है। तुम्हारा रात का खाना वहीं।''

"जी चाचीजी!'' समवेत स्वर में उनकी हामी सुनने के बाद वह चली गई और वे दोनों पढ़ाई करने लगे।

उसके जाने के बाद उन्होंने आपस में सलाह-मशविरा किया कि धनराशि बंद लिफाफे के माध्यम से भेंट की जाए। के जन्मदिन पर उसे क्या उपहार दिया जाए।

रात्रि को जन्मदिन के उत्सव में वे दोनों शामिल हुए। वहाँ काफी जमा थे। केक काटा गया। उसे बाँटा गया। नाचना गाना हुआ।

उपहार भेंट किए गए और आखिर में खाना-पीना हुआ। उन्होंने भी अपनी ओर से बंद लिफाफे भेंट किए। रात को कमरे में लौटकर अपनी पढ़ाई करने लगे।

अगले दिन रोहन खेलता हुआ उनके कमरे में पहुँचा तो प्रशांत उससे पूछने लगा, "कैसा रहा तुम्हारा बर्थडे?''

"बहुत अच्छा रहा, खूब मजा आया।''

"और बहुत सारे गिफ्ट भी मिले होंगे?''

"हाँ भैया! बहुत सारे गिफ्ट मिले।'' उसका चहकना जारी था, फिर एकाएक उसे जैसे याद आया दृ "भैया, आपके गिफ्ट भी अच्छे थे। बहुत आपके फिफ्टी और प्रशांत भैया के लिफाफे में हंड्रेड थे।''

उसकी बात सुनकर अनुराग के हँसते- मुसकराते चेहरे का रंग एकदम फीका पड़ गया और प्रशांत का चेहरा भी बदरंग होने लगा था। उस समय अनुराग को लगा था कि धरती फट जाए और वह उसमें समा जाए। प्रशांत की ओर नजर उठाकर देखने का साहस भी उसमें नहीं रह गया था। कमरे में कोई मनहूस सा सन्नाटा पसर गया था। उनके बदले हुए चेहरे देखकर रोहन भी कमरे में बहुत देर नहीं रुक सका। वह बिना कुछ कहे कमरे से बाहर चला गया था।

''काश! इस समय रोहन हमारे कमरे में नहीं आया होता तो अपनी चोरी पकड़े जाने पर अनुराग को बेहद ग्लानि होने लगी थी। वह शर्मिंदा था।

"तुमने ऐसा क्यों किया?'' अपने भीतर के गुस्से को भीतर ही दबाते हुए शांत स्वर में प्रशांत ने उससे पूछा था, लेकिन अनुराग निरुतर था।

आखिर सारा साहस बटोरकर अनुराग उससे इतना ही कह सका था, "मुझसे बहुत बड़ी भूल हो गई। मुझे माफ कर दो!'' उसने अपने किए के लिए क्षमा याचना की थी, लेकिन वह जानता था कि उसने जो किया, वह मित्रता के साथ बहुत बड़ा विश्वासघात था। अक्षम्य अपराध था। उसके लिए क्षमा याचना कोई मायने नहीं रखती थी।

"तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था। मुझे भी बता देते तो मैं भो तुम्हारे बराबर।'' अपने शांत स्वभाव के अनुरूप प्रशांत ने जैसे अपनी शिकायत दर्ज की थी।

कुछ दिन उनके बीच तनाव पसरा रहा, फिर धीरे-धीरे सब सामान्य सा होता गया। अनुराग व प्रशांत को सरकारी नौकरी भी मिल गई। वे एक-दूसरे से दूर हुए तो आज तक भी उनका मिलना नहीं हो सका है। हाँ, अनुराग को पता है, वह कहाँ है। वह जहाँ है, बेहद सुखी व संपन्न हैं। अपने मित्र के साथ किए विश्वासघात का असह्य बोझ आज भी अनुराग की आत्मा पर है। जीवन में अपनों के साथ किए विश्वासघात का पश्चाताप हमें सारी उम्र सालता है। अपनी आत्मा पर पड़े इस असह्य बोझ से मुक्ति के लिए अनुराग छटपटा रहा है, लेकिन मुक्ति है कि संभव नहीं। ❐

(साभार, साहित्य अमृत)

स्वयं को माफ करना न भूलें

■ प्रतिनिधि

प्रायः लोग जाने-अनजाने हुई गलतियों के लिए दूसरों से माफी माँगते हैं, यह अच्छी बात है, लेकिन जो गलतियाँ हम अपने साथ करते हैं, क्या हम उनके लिए खुद से माफी माँगते हैं? अपनी गलतियों की क्षमा के लिए हम दूसरों को खूब मनाते हैं, लेकिन क्या हम खुद को माफ करने के लिए स्वयं को मनाते हैं?

जैसे-जैसे जीवन में हम बड़े होते हैं, हमारे विचार भी समय के साथ नया आकार लेते हैं, वो भी बड़े होते जाते हैं, परिपक्व होते जाते हैं। जिन बच्चों के मन में बचपन से ही किसी-न-किसी तरह की आत्महीनता की भावना पैदा हो जाती है, उनके बड़े होने पर यह आत्महीनता की ग्रंथि उनके मन में जड़ पकड़ लेती है कि वे दूसरों से अच्छे नहीं हैं, कहीं-न-कहीं उनमें बहुत सारी कमियाँ हैं और वो उन्हें दूर नहीं कर सकते।

मनोवैज्ञानिकों के अनुसार- ज्यादातर मरीजों की समस्या के पीछे यही हीनभावना काम कर रही होती है। कोई अपने रूप-रंग से दुःखी होता है, तो किसी को यह लगता है कि वह कोई काम ठीक ढंग से नहीं कर सकता, कोई अपने जीवन में बुरी तरह से असफल रहता है, तो कोई पिछली भूलों के लिए खुद को ही कोसता रह जाता है।

इन सबका कारण है कि व्यक्ति के मन में आत्महीनता की ग्रंथि बसी हुई है, जिसके कारण वह खुद को उतना सम्मान नहीं देता, जितना वह दूसरों को देता है। वह दूसरों को जितना सुनना व समझना चाहता है, उतना वह अपने अंतर्मन की बात नहीं सुनता है और न ही समझता है। व्यक्ति दूसरों को खुश करने में लगा रहता है, लेकिन स्वयं को प्यार करने, स्वयं को खुश रखने की ओर उसका ध्यान ही नहीं जाता।

व्यक्ति का ध्यान जिस ओर जाता है, वह उसी दिशा में कार्य करने लगता है। जब किसी का ध्यान स्वयं से हटकर आस-पास रहने वाले लोगों पर केंद्रित होता है, तो ऐसा व्यक्ति स्वयं की क्षमताओं पर विश्वास नहीं कर पाता। वह सदैव अपनी कमियों को ही देखता है और अपनी खूबियों को नजरअंदाज करता है। वैसे कमियाँ तो हर व्यक्ति में हैं, लेकिन आगे वही बढ़ पाते हैं, जो अपनी कमियों को स्वीकारते हुए उन्हें दूर करने का प्रयत्न करते हैं और अपनी क्षमताओं में नित-निरंतर निखार लाते हैं।

आत्महीनता से ग्रसित व्यक्ति न अपने मन की सुनता है और न तन की। यदि शरीर आराम चाहता है, तो भी उसकी बात अनसुनी करके उससे अधिक-से-अधिक काम लेता है। दिमाग शांति चाहता है, लेकिन तरह-तरह के विचारों के कूड़ा-करकट से उसका दिमाग आक्रांत रहता है, परेशान रहता है। अतः ऐसे व्यक्ति खुलकर अपनी अभिव्यक्तियाँ नहीं देते, बल्कि स्वयं को दबाकर रखते हैं।

जब व्यक्ति स्वयं को कमजोर समझता है, अपने प्रति गलत दृष्टिकोण रखता है, अपने विषय में नकारात्मक ढंग से सोचता है, तो ऐसा व्यक्ति कोई भी बड़े काम नहीं कर पाता; क्योंकि उसे अपनी खूबियों पर भरोसा ही नहीं होता, वह स्वयं के प्रति लापरवाह होता है, और वह अपने समय का भी सम्मान नहीं करता। उसे लगता भी नहीं कि वह अपने प्रति कुछ गलत कर रहा है।

ऐसा व्यक्ति जब तक स्वयं को माफ नहीं करता, जिंदगी में आगे नहीं बढ़ पाता। खुद को माफ करने का मतलब यह नहीं कि वह अपनी गलती माने या हर स्थिति में अपनी गलतियों को स्वीकारे। खुद को माफ करने का मतलब है - खुद को समझना। यह हमारी गलती ही तो है कि अपनी बेहतरी के लिए

हमें जो करना था, जो हम कर सकते थे, वह हमने नहीं किया। जीवन में वह काम हमने किया, जो हमारे तन व मन को बीमार बना रहा था। हमें खुद से माफी माँगनी ही चाहिए कि हम खुद को गलत बातों के लिए कोसते रहे, खुद को ठेस पहुँचाते रहे, अपनी कमियों के कारण न खुद को प्यार कर सके और न खुद पर भरोसा कर पाए।

मनोविशेषज्ञों के अनुसार- खुद को माफ करने का मतलब अपनी जिम्मेदारियों से मुँह मोड़ना नहीं है। यह बेचारगी यानी खुद पर तरस खाने की बात भी नहीं है। यह खुद के प्रति एक तरह से जवाबदेही है, जो हमें बड़े बदलाव की ओर ले जाती है।

हमें अपनी गलतियों के लिए दूसरों से माफी माँगनी चाहिए, लेकिन उन गलतियों के लिए स्वयं से भी माफी माँगनी चाहिए, जो हमने अपने प्रति की हैं। बौद्ध दर्शन के अनुसार - घृणा, हीनता, या खुद को कोसते रहना ऐसे भाव हैं, जिनसे न तो दूसरों का भला होता है, और न ही हमारा। इनसे हमारे तन-मन पर कुंठा, उदासी, निराशा और भाँति-भाँति के रोगों की परतें चढ़ती रहती हैं। वे हम पर ही नहीं, औरों पर भी अपना नकारात्मक प्रभाव डालती हैं। इसलिए अपनी गलतियों को मानकर सच का सामना करना ही एक तरह से भूल सुधार है।

जैन तीर्थंकर महावीर प्रायश्चित का रास्ता संवर और निर्जरा में बताते हैं। संवर यानी नई गलतियाँ करने से खुद को रोकना और निर्जरा यानी पुरानी गलतियों को सुधारना। यदि हमने दूसरों को दु:ख पहुँचाया है तो उनसे माफी माँगें और यदि खुद को दु:ख पहुँचाया है तो खुद से भी माफी माँग लें।

युगऋषि परमपूज्य गुरुदेव आत्मिक प्रगति के चार चरण बताते हैं- आत्मचिंतन, आत्मसुधार, आत्मनिर्माण आत्मविकास। इनमें पहला चरण जो आत्मचिंतन है, उसमें हम अपने बारे में सोचते हैं और अपने किए जाने वाले कर्मों को देखते हैं, यदि हमसे अतीत में कोई गलती हुई है, तो उस भूल को सुधारने का प्रयास करते हैं, उसके लिए प्रायश्चित करते हैं और उस गलती को दोबारा न दोहराने का संकल्प लेते हैं। ऐसा करने से आत्मसुधार होता है, हम ग्रंथिमुक्त होते हैं और धीरे-धीरे इस प्रक्रिया का अभ्यास करने से हमारे व्यक्तित्व में एक नए तरह का बदलाव आता है और इसी के साथ हमारा आत्मविकास भी होता है।

युगऋषि का कथन है कि अपना महत्त्व समझो और विश्वास करो कि तुम दुनिया के सबसे महत्त्वपूर्ण व्यक्ति हो। युगऋषि का यह कथन और इसका मनन व्यक्ति को आत्महीनता की मनोग्रंथि से मुक्त करता है और उसके अंदर आत्मसम्मान व आत्मविश्वास की भावना को सुदृढ़ करता है।

यदि हम दूसरों से माफी माँगें तो हो सकता है कि वो हमें माफ करें या न करें, लेकिन खुद को तो हम अपनी गलतियों के लिए माफ कर ही सकते हैं। हमारे आत्मविकास के लिए, जीवन में आगे बढ़ने के लिए यह बहुत जरूरी है कि हम अपनी गलतियों को स्वीकारें, खुद को उन गलतियों के लिए माफ करें और उन्हें दोबारा न दोहराने के संकल्प के साथ जीवन में आगे बढ़ें। ऐसा करने से ही व्यक्तित्व का समग्र विकास सुनिश्चित हो पाता है। ❐

(साभार : युग निर्माण योजना)

शिव का सच्चा उपासक वही है, जो अपने मन की स्वार्थभावना को त्यागकर परोपकार की मनोवृत्ति को अपनाता है। जब हमारे मन में यह विचार उत्पन्न होने लगता है तो हम अपने स्वजनों के साथ झूठ, छल, कपट, धोखा, बेईमानी, ईर्ष्या, द्वेष आदि से मुक्त होने लगते हैं। यदि शिवरात्रि व्रत के दिन इस महान पथ का अवलंबन नहीं लेते तो शिव का व्रत और पूजन केवल लकीर पीटना मात्र रह जाएगा।

- परमपूज्य गुरुदेव

मुकाबला नहीं पटियाला पोशाक का

■ मीनाक्षी मक्कड़

वसंत पंचमी के दिन पीले रंग का विशेष आकर्षण होता है, क्योंकि यह रंग सरसों के फूलों से जुड़ा होता है, जो मौसम (वसंत की शुरुआत) में खिलते हैं। अत: पीले वस्त्र धारण करना भी इसके लिए एक प्रोत्साहन है। पीला रंग शिक्षकों, ज्ञान, गुरुओं, देवताओं और शुभता से भी जुड़ा है। सरस्वती पूजा से जुड़ी हर चीज पीले रंग से जुड़ी होती है। इस दिन के लिए आप पटियाला सलवार कमीज, कुर्ता पलाजो, साड़ी, एम्ब्रॉयडरी शरारा सूट सेट, पीला बंधेज पोशाक या लहंगा भी चुन सकती हैं।

सलवार कमीज के लिए ब्रोकेड, लिनेन और कॉटन ऐसे कपड़े हैं जो आपके फिगर के साथ नहीं बहते हैं ओर आपको भारी दिखा सकते हैं। शिफॉन, क्रेप और जॉर्जेट जैसे कपड़े आपके लिए हिलना-डुलना आसान बना देंगे, ऐसे कपड़े चुनें जो हल्के हों और बहने वाले हों और यह सुनिश्चित करेंगे कि आप स्टॉकी नहीं दिखें।

अपने पटियाला के साथ एक लंबे कुर्ते का चुनाव बिल्कुल नहीं करना चाहिए। लंबा कुर्ता आपकी सलवार को ढक देगा यह एक अलिखित नियम है कि अगर आप इसे पटियाला सलवार के साथ पेयर कर रही हैं तो आपको ऐसा कुर्ता पहनना चाहिए जो घुटने की लंबाई से छोटा हो। एक लंबा कुर्ता पहनकर आप सलवार के सभी प्लीट्स को कवर कर लेती हैं, जो आपकी पूरे लुक का आकर्षण है।

जब आप भारी कपड़े जैसे ब्रोकेड या बहुत सारी कढ़ाई के साथ सूट पहन रहे हों, तो कम से कम एक्सेसरीज चुनें। जब आपके कुर्ते की नेकलाइन भारी हो तो नेकलेस पहनना या जब स्लीव्स पर बहुत काम हो तो बहुत सारी चूड़ियां पहनना ठीक नहीं है।

कुछ सूट में दुपट्टे की आवश्यकता होती है, जबकि अन्य सूट में आप आसानी से उन कुछ अतिरिक्त मीटर के कपड़े को छोड़ सकते हैं। भारी काम के साथ एक गहरी या विस्तृत नेकलाइन वाले सूट के साथ दुपट्टे को न पहनना थोड़ा अजीब लग सकता है। यदि आप एक सूट के साथ एक भारी दुपट्टे के लिए नहीं जाना चाहती हैं जिसमें पहले से ही बहुत सारे अलंकरण हैं, तो एक सादे शिफॉन दुपट्टे के लिए जाएं जो आपकी नेकलाइन की सुन्दरता की झलक देता है।

आपके सूट के लिए रंग समन्वय आवश्यक है, लेकिन एक ही रंग में सब कुछ पहनना निश्चित रूप से ठीक नहीं है। अगर आप कंट्रास्ट कॉम्बिनेशन नहीं पहनना चाहती हैं तो एक ही रंग के अलग-अलग शेट्स चुनें।

दुपट्टे की लंबाई 2.5 मीटर से कम नहीं होनी चाहिए। जब आप दुपट्टे को अपने कंधों पर साइड में पहनती हैं, तो यह आपके घुटनों तक पहुंचना चाहिए।

लंबी सलवार के साथ जूतियां पहनना, जो आपके पैरों में फंस सकती है, या सलवार के साथ हील्स पहना, जो सीधे आपके टखने पर समाप्त हो, एक बुरा विचार है। ऐसी हील्स चुनें जो चलने में आरामदायक हों और फुटवियर चुनते समय हमेशा सलवार की लंबाई को ध्यान में रखें।

साड़ी पहनना बहुत आसान है, बस आपको कुछ बातों का ध्यान रखना चाहिए- पेटीकोट का कट बुद्धिकानी से चुनें। पैनल वाले से लेकर ए-लाइन या साइड एकत्रित पेटीकोट वह चुनें जो साइड इंसर्ट पर इकट्ठा हो। यह आपकी साड़ी को जगह पर रखता है।

साड़ी पहनने से पहले अपनी हील्स पहनें। थोड़ी ऊँची एड़ी के सैंडल चुनें क्योंकि वे आपके चलने में कुछ अनुग्रह जोड़ते हैं और आपकी मुद्रा को सही करते हैं।

सुनिश्चित करें कि पेटीकोट का कपड़ा सुखदायक

और आरामदायक हो। साटन या पालिस्टर से बना पेटीकोट आपकी त्वचा से चिपक जाएगा, जो आपकी परेशानी को बढ़ा सकता है। यदि आप कपड़े को बिल्कुल नहीं बदल सकते हैं, विशेष रूप से नेट की साड़ियों में, जहां पेटीकोट दिखाई देता है, तो कपड़े को चिपकने से रोकने के लिए अपने पैरों पर थोड़ा टैल्कम पाउडर रगड़ सकते हैं। प्लीट्स को एक साथ रखने के लिए एक पिन का इस्तेमाल करें।

सुनिश्चित करें कि पहली प्लीट बाकी की तुलना में थोड़ी गहरी हो। इस बात का ध्यान रखें कि साड़ी को ज्यादा टाइट या ज्यादा लूज न बांधें। अगर साड़ी को बहुत ज्यादा बांधा गया है, तो यह आपके घुटनों को लॉक कर देगा और आपके लिए इसमें घूमना और भी मूश्किल हो जाएगा और अगर साड़ी बहुत ढीली बंधी है, तो वह अपनी जगह से हिनती-डुलती रहेगी। आपके द्वारा इसे लपेटने के बाद, यह देखने के लिए चारों आरे घूमें कि क्या आप सहज हैं। । ❐

(लेखिका जानी-मानी फैशन डिजाइनर हैं)

केन्द्र का अवलोकन

गत 19 जनवरी को सेवा भारती, उत्तरी विभाग, रोहिणी जिला, मंगोल पुरी केन्द्र पर प्रिंस पब्लिक स्कूल, सेक्टर 24, रोहिणी की शिक्षिका श्रीमती श्वेता शर्मा और 9वीं व 11वीं कक्षा के छात्र व छात्राएं (17 छात्र), सेवा भारती के बच्चों से मिलने आए। इन लोगों ने बच्चों के साथ लूडो, चेस, कैरम जैसे खेल खेले और साथ ही कविता और गीत इत्यादि भी सुनाए। ये लोग बच्चों के लिए खिलौने और कपड़े भी लाए थे। श्वेता शर्मा जी ने 1100 रुपये की नकद राशि बच्चों के लिए दी। जिले के मंत्री श्री ज्ञानचन्द जैन जी ने सेवा भारती के बारे में जानकारी दी।

–**दीप्ति,** निरीक्षिका, रोहिणी जिला

BANSAL WIRE INDUSTRIES LTD.

BANSAL

Stainless Steel Wires - High/Medium Carbon Steel Wires
(Black and Galvonised)

Mfrs. : Low Carbon Steel Wires, Profile/Shaped Wires
(Black and Galvonised)

H.B. HHB & G.I. WIRES

Bansal Wire Industries Ltd.
F-3, Shastri Nagar, Delhi-110052 (India)
Tel. : +91-11-23648401, 23651890-91-92-93
Email : info@bansalwire.com, www.bansalwire.com

सेवाधाम अवलोकन

गत 19 जनवरी को ग्लोब कैपिटल फाउण्डेशन के मुख्य निदेशक एवं संचालक श्री अशोक अग्रवाल, श्री यशपाल एवं श्री सुनील जैन का सेवा भारती सेवाधाम विद्या मन्दिर, मण्डोली में आगमन हुआ। सेवा भारती दिल्ली प्रांत के अध्यक्ष श्री रमेश अग्रवाल, उपाध्यक्ष श्री हेमंत कुमार एवं कोषाध्यक्ष श्री विजेन्द्र गोयल ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। सेवाधाम के विद्यार्थियों द्वारा सभी अतिथियों को स्मृति चिन्ह प्रदान किया गया तथा सरस्वती वंदना एवं प्रार्थना का अद्‌भुत एवं प्रभावी सामूहिक गायन हुआ। सभी माननीय अतिथियों ने सेवाधाम के आवासीय क्षेत्र एवं विद्यालय कक्षाओं का अवलोकन किया। श्री रमेश अग्रवाल का भावपूर्ण उद्‌बोधन हुआ। सेवाधाम के कार्यों एवं गतिविधियों से प्रभावित होकर श्री अशोक अग्रवाल ने 100 छात्रों के समस्त व्यय का सहयोग करने का संकल्प लिया। श्री सुभाष अग्रवाल जी, 37 हर्ष विहार, पीतमपुरा दिल्ली तथा नीलकमल जी, कजारिया वाटर प्रूफ प्लाईवुड के प्रमुख डीलर की भी गरिमामय उपस्थिति रही। अंत में विद्यालय के प्रबंधक ओंकार नाथ मिश्र ने सेवाधाम में पधारने एवं सहयोग के लिए सबका धन्यवाद किया।

स्ट्रीट चिल्ड्रेन प्रकल्प में सामूहिक हवन

मकर संक्रान्ति के शुभ अवसर पर केशव सेवा केंद्र, स्ट्रीट चिल्ड्रेन प्रोजेक्ट में 14 जनवरी, 2023 को सामूहिक हवन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें कल 16 यजमानों ने भाग लिया। 5 कुंडीय हवन की व्यवस्था थी, जिसमें से 4 हवन कुंडों के पास कुल चार-चार यजमान बैठे थे तथा एक हवन कुंड के पास ऐसे बच्चे बैठे थे जिनका जन्म दिन जनवरी महीने में है। कार्यक्रम में बस्ती के लगभग 200 बंधु एवं भगिनियों ने हिस्सा लिया। प्रसाद के रूप में उपस्थित लोगों को बच्चों के घरों से आई खिचड़ी का प्रसाद वितरित किया गया तथा उन्हें हलवा का प्रसाद भी दिया गया।

श्री सीताराम जी का सम्मान

श्री सीताराम जी 'सेवा समर्पण' के माध्यम से आचार्य मायाराम पतंग से जुड़े। उन्होंने सेवा भारती के वेलकम स्थित श्रीराम मन्दिर, सेवा केन्द्र की 7 कन्याओं को सिलाई की मशीनें दिलवाई। सुदामा पुरी माधव सेवा केन्द्र में 5 सिलाई की मशीन दी तथा चार-चार लेडिज सूट के कपड़े भी दिये ताकि वे सिलकर कुछ धन उपार्जन कर सकें।

माता जीवनी बाई केन्द्र के लिए सीता राम जी ने 5 कम्प्यूटर खरीद कर प्रदान किये। हर परिस्थिति में वे सेवा के लिए तैयार रहते हैं। 8 जनवरी को उनको सेवा भारती की ओर से सम्मानित किया गया। उपस्थित कार्यकर्ता आचार्य मायाराम पतंग जी, वीरेन्द्र माटा जी, मुकेश मिश्रा जी, आनन्द चौहान जी, रूमी जी, सभी कार्यकर्ताओं ने उनके निवास स्थान पर जाकर उन्हें सम्मानित किया। इस अवसर पर सीताराम जी ने 5100 रु. सामूहिक विवाह हेतु दान दिये। सेवा भारती परिवार की ओर से बहुत-बहुत धन्यवाद।

रजिस्टर्ड क्रमांक 40605/1983
तिथि 6-7 फरवरी, 2023, प्रकाशन तिथि-5 फरवरी, 2023
Posted at - LPC, DELHI RMS, DELHI-110006

डाक रजिस्टर्ड नं. U(C)-166/2022-24
DL(ND)-11/6188/2022-23-24
अग्रिम शुल्क के बिना प्रेषण

सामूहिक विवाह चित्रों में

दक्षिणी (बदरपुर जिला)

यमुना विहार विभाग

मोती नगर जिला

झंडेवाला विभाग

उत्तरी विभाग (रोहिणी)

पश्चिमी विभाग (नांगलोई)

मुद्रक/संपादक/प्रकाशक: इन्दिरा मोहन द्वारा सेवा प्रकाशन न्यास के लिए 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित तथा शक्ति प्रिन्टर्स 1/3001, गली न.-16, रामनगर, मंडोली रोड, शाहदरा, दिल्ली-32, से मुद्रित।